

वार्तालाप-617, हैदराबाद, दिनांक 22.08.08
Disc.CD No.617, dated 22.08.08 at Hyderabad
Extracts-Part-1

समय: 02.44-03.42

जिज्ञासु: संगमयुग है डरावना युग। माया और फतकाती है।

बाबा: संगमयुग मौजों का युग है कि डरावना युग है? संगमयुग है मौजों का युग।

जिज्ञासु: ये भी कहा है।

बाबा: ये भी नहीं, यही कहा है कि मौजों का युग है संगमयुग। और बाकी द्वापर कलियुग है डरावना युग और सतयुग त्रेता है निर्भय रहने का युग। देह समझते हैं तो देहभान के कारण डर लगता है। आत्मा समझें तो डर भाग जाएगा। क्यों? क्योंकि आत्मा तो मरती नहीं। काटी नहीं जा सकती। भगाई नहीं जा सकती। आत्मा तो अजर अमर अविनाशी है। उसका कोई क्या बिगाड़ेगा?

Time: 02.44-03.42

Student: The Confluence Age is a dangerous age. Maya troubles us more.

Baba: Is the Confluence Age an age of joy or a dangerous age? The Confluence Age is an age of joy.

Student: This has also been said.

Baba: It is not that 'this has also [been said]' but 'only this has been said' that the Confluence Age is an age of joy. As for the rest the Copper and Iron Ages are dangerous ages and the Golden and Silver Ages are the ages to remain fearless. When you consider yourself to be a body, then you feel afraid because of body consciousness. If you consider yourself to be a soul, then the fear will vanish. Why? It is because the soul does not die. It cannot be cut. It cannot be abducted. A soul is ageless, immortal, indestructible. How can anyone harm it?

समय: 03.45-04.48

जिज्ञासु: सोने की लंका बोलते हैं।

बाबा: हाँ, हाँ।

जिज्ञासु: लंका तो है रावण राज्य।

बाबा: सारी दुनिया लंका ही है। ऊँचे-ऊँचे महल-माडियाँ, अटारियाँ, हवाई जहाज, ऐरोप्लेन, मोटर कारें- ये सब देख-देख के लोग क्या समझते हैं? रावण की लंका को ही स्वर्ग समझो बैठे हैं। परन्तु उन्हें पता ही नहीं है कि स्वर्ग में तो कोई प्रकार का दुःख नहीं होता। यहाँ तो सब बीमार पड़ते हैं। वहाँ कोई बीमार भी नहीं पड़ेगा। मेहनत भी कोई नहीं करनी पड़ती है। शारीरिक कोई धंधा-धोरी नहीं करना पड़ता। प्रकृति सब कुछ पैदाइश करती है।

Time: 03.45-04.48

Student: It is said that the Lanka was made of gold.

Baba: Yes, yes.

Student: Lanka is the kingdom of Ravan.

Baba: The entire world itself is Lanka. Tall palaces, buildings, mansions, aeroplanes, motor-cars; what do people think by seeing all these? They consider Ravan's Lanka itself to be heaven. But they do not know at all that there is no kind of sorrow in heaven. Here, everyone falls sick. There, nobody will fall sick. You need not make any effort either. You need not pursue any physical occupation. Nature produces everything.

समय: 04.50-05.50

जिज्ञासु: बाबा, प्रदर्शनी के बुक के लास्ट के पेज पीछे एक गुलदस्ता है बाबा। इसमें 8 फूल हैं। एक-एक फूल में लिखा है - सहनशीलता, निर्भयता, पवित्रता, हर्षितमुखता, मधुरता, नम्रता, अंतर्मुखता, धैर्यता। लास्ट में लिखा है कमल फूल समान पवित्र बनो। माना बाबा ये 8 फूल किस- किसकी यादगार है चैतन्य में?

बाबा: अष्ट देव हैं। जो दुनिया का पहला-पहला, नई दुनिया का पहला गुलदस्ता बनेगा उसमें सब प्रकार के फूलों का फाउन्डेशन होगा ना। तो फूल दिखाय दिये हैं। बाकी ये चित्र तो मनुष्यों ने बनाए हैं।

Time: 04.50-05.50

Student: Baba, there is a bouquet of flowers behind the last page of the book [named] *Pradarshani*. There are eight flowers in it. It has been written on each flower - tolerance, fearlessness, purity, joyfulness, sweetness, humility, introversion, patience. In the end it is written: Be pure like the lotus flower. Baba these 8 flowers are the memorials of which souls in a living form?

Baba: They are the eight deities. The first bouquet of the world, the new world will have a *foundation* of all kinds of flowers, will it not? So, flowers have been depicted. Otherwise, these pictures have been prepared by human beings.

समय: 06.48-08.40

जिज्ञासु: जो डायरेक्ट एडवांस में आया बाबा...

बाबा: डायरेक्ट एडवांस में कोई आता ही नहीं है। पूर्व जन्म में पहले ही बेसिक में आ चुके हैं।

जिज्ञासु: तब तो भक्ति पूरा ...

बाबा: भक्ति पूरा होने से एडवांस में नहीं। एडवांस वालों की भक्ति नहीं चल रही है? जो एडवांस में चल रहे हैं वो भक्तिमार्ग में चल रहे हैं कि नहीं? हँ? वो भी भक्ति में चल रहे हैं तो जो बेसिक वाले हैं, उनकी भक्ति कैसे पूरी हो जाएगी? हाँ, बेसिकली आत्मा की कट उतरती है। वो आत्मा की कट कोई की पूर्व जन्म में ही पुरुषार्थ से उतर गई, कोई की रह गई। तो दूसरा जन्म ले करके बेसिक ज्ञान लेते हैं। जैसे राम वाली आत्मा, सीता वाली आत्मा। दुबारा जन्म ले करके उनको फिर पुरुषार्थ करना पड़ता है बेसिक नॉलेज का। कोई ऐसे होते हैं कि पूर्व जन्म में ही उनकी बेसिक नॉलेज इतनी पक्की हो चुकी कि दूसरा जन्म लेकर जब आते हैं तो जैसे ही डायरेक्ट थोड़ा भी एडवांस ज्ञान सुना और उनकी बुद्धि फट से पकड़ लेती है मैं

आत्मा ज्योतिबिन्दु। लम्बा चौड़ा पुरुषार्थ करने की दरकार ही नहीं। ये कोई ज़रूरी नहीं है कि जो भी ज्ञान में आवेंगे तो बेसिक कोर्स ले करके ही आवें। डायरेक्ट भी आ जाते हैं।

Time: 06.48-08.40

Student: Baba, as regards those who came directly in advance...

Baba: Nobody comes directly in the advance [party] at all. They have already entered the basic [knowledge] in the past birth.

Student: Then their *bhakti* is over...

Baba: Someone does not enter the advance [party] when his *bhakti* is complete. Is *bhakti* not going on among those who are in the advance [party]? Are those who follow the advance [knowledge] following the path of *bhakti* or not? They are also following *bhakti*, then how will the *bhakti* of those who are following the basic [knowledge] be over? Yes, the rust of the soul is removed basically. In case of some that rust of the soul has been removed in the past birth itself through *purusharth* whereas [the rust] of some remained. So, they have another birth and obtain the basic knowledge. For example the soul of Ram, the soul of Sita. They have to be reborn and make *purusharth* of the *basic knowledge* once again. Some are such that their *basic knowledge* has become so strong in the past birth itself that when they come being born again, as soon as they listen even to a little advance knowledge, their intellect catches immediately that I am a Point of light soul. There is no need to make a lot of *purusharth* at all. It is not necessary that whoever enters the path of knowledge will come only after obtaining the *basic course*. They come directly as well.

समय: 08.45-10.46

बाबा: एक प्रश्न आया है - पाण्डवों ने कौनसा जुआ खेला?

उत्तर: अरे, जो जुआ खेला उसमें तन की बाजी लगाई कि नहीं? अपने परिवार के जो भी सगे-सम्बन्धी थे उनका तन अर्पण किया कि नहीं जुआ में? (जिज्ञासु - किया।) बीबी भी, छोटा भाई, बाल-बच्चे समान वो भी, और अपने को भी जुए में लगाया। तो यहाँ जो ज्ञान में चलते हैं, चाहे बेसिक में चलते हों, चाहे एडवांस में चलते हों, यहाँ भी तन, धन, धाम, सुहृद् परिवार, इनकी बाजी लगाई जाती है। ईश्वरीय कार्य में जो बाजी लगाय रहे हैं... सन् 76 जब हुआ था तो बहुतों ने बेसिक में अपनी सारी बाजी लगा दी। बीबी बाल बच्चे भी स्वाहा कर दिये, यज्ञ में अर्पण कर दिये। अपनी सारी प्रापर्टी बेच कर यज्ञ में लगा दी। तो जुआ खेला कि नहीं खेला?

दूसरा जिज्ञासु: बाबा लौकिक में जुआ खेलना खराब समझते हैं ना।

बाबा: ये तो लौकिक है कि अलौकिक है? ये लौकिक जुआ है या अलौकिक जुआ है?

जिज्ञासु: अलौकिक।

बाबा: ये तो बेहद का जुआ है, बेहद की बाजी है। जो निश्चयबुद्धि होते हैं वो ही खेल पाते हैं।

Time: 08.45-10.46

Baba: A question has been asked: Which game of dice (*jua*) did the Pandavas play?

Reply: *Arey*, did they put their body at stake in the game of dice that they played or not? Did they sacrifice the body of their near and dear ones of their family in the game of dice or not?

(Student: They did.) He used his wife, his younger brother, who is like his child and he used himself in the game of dice as well. So, those who follow the path of knowledge here, whether it is in *basic* or *advance*, even here we sacrifice the body, the wealth, the near and dear ones, the family. Those who are sacrificing [these things] in the task of God... Many in the basic [knowledge] sacrificed everything in 1976. They sacrificed their wife and children as well. They surrendered them in the *yagya*. They sold their entire *property* and invested in the *yagya*. So, did they play a game of dice or not?

Another student: Baba, playing the game of dice is considered to be bad in the *lokik* world, isn't it?

Baba: Is this *lokik* or *alokik* [game of dice]? Is this a *lokik* game of dice or *alokik* game of dice?

Student: *Alokik*.

Baba: This is an unlimited game of dice. It is an unlimited bet (*baaji*). Only those who have a faithful intellect are able to play. ... (to be continued.)

Extracts-Part-2

समय: 11.14-12.45

जिज्ञासु: एक मुरली में बोला है कि मोर तीन बार उड़ता है। उसका अर्थ क्या है?

बाबा: मुरली में बोला कि मोर तीन उड़ाने उड़ता है। तो ब्राह्मणों की दुनिया में भारतवासियों का राष्ट्रीय पक्षी तो पता ही है। कौनसा है? मोर। मोर जैसी पवित्रता की उड़ान भरनी है। एक बार उड़ान भरी, दूसरी बार उड़ान भरी। पहली बार की उड़ान है सतयुगी शूटिंग में, बेसिक नॉलेज में। फिर दूसरी बार उड़ान है त्रेतायुगी शूटिंग में, द्वापरयुगी शूटिंग में, जिसे कहते हैं एडवांस ज्ञान और तीसरी उड़ान है जब प्रैक्टिकल कार्य करने वाली तीसरी मूर्ति निकलती है, तो तीसरी उड़ान भरेगा। उसके बाद चौथी उड़ान भरने के दरकार है? (किसीने कहा - नहीं।) दरकार ही नहीं रहेगी।

Time: 11.44-12.45

Student: It has been said in a murli that a peacock flies thrice. What does it mean?

Baba: It has been said in the murli that a peacock makes three flights. So, [everybody] certainly knows the nation bird of the *Bharatwasis* (residents of Bharat) in the Brahmin world. What is it? The peacock. We have to make a flight of purity like the peacock. He made a flight once, twice. The first flight is in the shooting of the Golden Age, in the *basic knowledge*. Then, the second flight is in the shooting of the Silver and Copper Ages which is called the advance knowledge. And the third flight is when the third personality who does the work in practice, comes. He will make the third flight then. After that is it necessary for him to make a fourth flight? (Someone said: No.) He won't need it at all.

समय: 13.20-14.41

जिज्ञासु: बाबा, निगम बच्चे को कहा है नेपाल में जाके सर्विस करने के लिए ।

बाबा: हाँ।

जिज्ञासु: इसका मतलब क्या है?

बाबा: आगम और निगम।

जिज्ञासु: जिसको गम नहीं है।

बाबा: शास्त्रों का नाम है। आगम और निगम। निःशेष गम। बाबा कहते हैं बेगमपुर के बादशाह। कोई गम नहीं। तो दिल्ली का कोई बच्चे का नाम है जो अच्छी गीतापाठशाला चला रहा था। बाबा उसकी गीतापाठशाला से खुश थे। तो उसको डायरेक्शन दिया कि नेपाल में जाके सर्विस करो। हद के नेपाल में या बेहद के नेपाल में?

जिज्ञासु: बेहद के नेपाल में।

बाबा: बेहद के नेपालवालों की सर्विस करो। नाम बाला नई पाल वालों से होगा, जो नई दुनिया की पालना करने का फाउण्डेशन लगाएंगे। बाकी और-और धर्म के जो ग्रुप्स हैं एडवांस पार्टी में हों, चाहे बेसिक में, वो नई दुनिया का फाउण्डेशन नहीं लगाय सकेंगे।

Time: 13.20-14.41

Student: Baba, [Baba] asked child Nigam to go and do service in Nepal.

Baba: Yes.

Student: What does it mean?

Baba: Aagam and Nigam.

Student: The one who does not have any *gam* (sorrow).

Baba: These are the names of scriptures. Aagam and Nigam. *Nihshesh gam* (No sorrow). Baba says: *Begampur ke baadshaah* (emperors of the abode without sorrow). There is no *gam* (sorrow). So, it is the name of a child from Delhi who was running a *gitapathshala* well. Baba was happy with his *gitapathshala*. He was given directions: Go to Nepal and do service. In the limited Nepal or in the unlimited Nepal?

Student: In the unlimited Nepal.

Baba: Serve the unlimited Nepalis. Those from *nai paal* (Nepal), who will lay the *foundation* of sustaining the new world, will bring fame. The *groups* of other religions whether in the advance party or in the basic [knowledge], will not be able to lay the *foundation* of the new world.

समय: 14.44-16.00

जिज्ञासु: मोर सतयुग में ...

बाबा: अरे मोर नहीं होगा तो फिर कौनसा पक्षी होगा? सतयुग में तो अच्छे-अच्छे पक्षी होंगे, अच्छे-अच्छे जानवर होंगे। दूसरे तो कोई जीव-जन्तु नहीं होंगे जो दुःख देने वाले, गन्द करने वाले हों। मोर तो अपना आज भी राष्ट्रीय पक्षी माना जाता है। मोर का तो पूँछ भी देहअभिमान की कृष्ण के मुकुट में लगाई जाती है। जैसे मोर पवित्रता धारण करता है ऐसे ही इन्द्रियों को हमको भी पवित्र बनाना है। मोर मोरनी साथ-साथ रहते हैं लेकिन भ्रष्ट इन्द्रियों से कर्म नहीं करते। दुष्कर्म करने की तो बात ही नहीं। दुःख देने की तो बात ही नहीं।

Time: 14.44-16.00

Student: Peacocks in the Golden Age...

Baba: *Arey*, if there isn't the peacock, which other bird will there be? There will be nice birds in the Golden Age; there will be nice animals. There will not be any other living creatures who give sorrow or do dirt. The peacock is considered to be our national bird even today. Even the peacock's tail of body consciousness is placed on the crown of Krishna. Just as a peacock assimilates purity, we too, have to make the *indirya*¹ pure. A peacock and peahen live together, but they do not act through the unrighteous *indirya*. There is no question of committing any misdeed at all. There is no question of giving sorrow at all.

समय: 16.05-17.33

जिज्ञासु: गैस के पाइपलाइन फटने से जल नहीं मिलेगा। हद का गैस है और बेहद का गैस भी है बोला। बेहद का गैस क्या है?

बाबा: गैस की पाइपलाइन फटने से पानी नहीं मिलेगा?

दूसरा जिज्ञासु: जल विषयी बन जाएगा ना बाबा गैस के पाइप फटे तो।

बाबा: हाँ।

Time: 16.05-17.33

Student: We will not get water if the gas pipelines burst. It has been said that there is a limited as well as an unlimited gas. What is meant by the unlimited gas?

Baba: We will not get water if the gas pipeline bursts?

Another student: Baba, the water will become poisonous if the pipes burst, will it not?

Baba: Yes.

दूसरा जिज्ञासु: तो बेहद का गैस क्या है?

बाबा: गैस की पाइप फटेगी तो वायुमण्डल विषैला बन जाएगा। जल में थोड़े ही गैस है। अच्छा, जो सागर में पाइपलाइनें बिछाई गई हैं। सागर का पानी तो वैसे भी पीने के लिए यूज नहीं करते। सागर की तो बात ही नहीं है। और गैस तो कहते ही हैं ऐश। गई ऐश में। कहाँ गई? (जिज्ञासु - ऐश में।) ऐश आराम करने में गई। तो जो ताकत ऐश आराम करने में जाती है उसी से गैस बनती है जिसमें से बदबू निकलती है। आदमी को भी गैस की बीमारी होती है कि नहीं? देवताओं को होती है क्या? क्यों नहीं होती? क्योंकि देवताएं ऐश आराम में नहीं जाते। इसलिए उनको गैस की बीमारी नहीं होती।

Another student: What does it mean in the unlimited?

Baba: If the *gas* pipeline bursts, the atmosphere will become poisonous. There isn't *gas* in water. *Accha*, [you are talking about] the pipelines that have been laid in the ocean? The water of the ocean is not used for drinking purpose anyway. It is not at all the question of the ocean. And as regards *gas* it is said *aish* (luxury). *Gayi aish mein* (It was spent in luxury). Where did it go? (Student: In luxury.) It was spent in luxury and comfort. So, the strength that is spent in enjoying luxury and comfort causes the formation of *gas* which emits bad

¹ Parts of the body and organs of the senses

smell. Do people suffer from *gas* trouble or not? Do the deities have this disease? Why don't they have it? It is because deities do not enjoy luxury and comfort. This is why they do not suffer from *gas* trouble.

समय: 17.42-20.26

जिज्ञासु: बाबा, माया देवी कहते हैं, शनि देव भी कहते हैं।

बाबा: माया देवी भी कहते हैं। शनिदेव कहते हैं।

जिज्ञासु: राहु।

बाबा: राहु ने भी अमृत पी लिया। वो भी खण्डित देवता बन गया। देवता तो बना, अमर तो बना। लेकिन कैसा देवता बना? खण्डित देवता बन गया। शनिदेव को भी देवता कहते हैं। लेकिन भाव स्वभाव संस्कार कैसा है? दुःख देने वाला भाषा बोलता है। अहंकारमयी भाषा बोलता है। तो उसने भी कुछ पवित्रता का पालन किया होगा।

Time: 17.42-20.26

Student: Baba, Maya is called a *devi* (female deity). Shani is also called a deity.

Baba: Maya is called a *devi*; Shani (the planet Saturn) is called a deity.

Student: Rahu.

Baba: Rahu² also drank nectar. He too became an incomplete deity (*khandit devata*). He did become a deity, he did become imperishable, yet what kind of a deity did he become? He became an incomplete deity. Shani is also called a deity. But what kind of feelings, nature and *sanskar* does he have? He speaks a language that gives sorrow. He speaks a language full of ego. So, he too, must have assimilated purity to some extent.

जैसे चण्डिका देवी की पूजा होती है। तो चण्डिका देवी ने भी कुछ न कुछ पवित्रता की पालना की होगी। नम्बरवार देवताएं हैं ना। जो अक्वल नंबर है वो तो एक ही है जिसकी कोई त्रुटि नहीं, कोई ग्लानि नहीं। शास्त्रों में भी कोई ग्लानि नहीं करता। नारायण। बाकी सबकी कुछ न कुछ ग्लानि है। एक ही है जिसने संपूर्ण पवित्रता का पालन करके दिखाया। एवर प्योर शिव है। तो एवर प्योर पार्ट बजा करके एक ही दिखा पाता है। उसकी यादगार भी बनाई जाती है लिंग। रखा हुआ कीचड़ में है, लेकिन अमोघवीर्य कहा जाता है। ये प्योरिटी का पालन एक नारायण के सिवाय और कोई नहीं कर सकता।

जिज्ञासु: तीनों अलग-अलग हैं ?

बाबा: क्या?

जिज्ञासु: राहु, शनि और...।

बाबा: राहु तो अलग है ही। राहु की दशा तो सबसे खराब होती है।

² Name of a demon supposed to seize the Sun and Moon in his mouth and so to cause eclipses

For example, Chandika Devi is worshipped. So, Chandika Devi too, will have assimilated purity to some extent. There are number wise³ deities, aren't there? There is only one who is No.1, he is the one who is flawless, who has not been defamed in any manner. He is not defamed in the scriptures either. [He is] Narayan. All others have been defamed to some extent. There is only one who set an example of assimilating complete purity. Shiva is *ever pure*. So, only one is able to show the *part* of being *ever pure*. His memorial is also made as the *ling*⁴. It is placed in mire, but is called *amoghviirya* (the one whose vigour is not drained). No one except one Narayan is able to assimilate this purity.

Student: Are all the three separate?

Baba: What?

Student: Rahu, Shani and....

Baba: Rahu is definitely different. Rahu's influence is considered to be the worst one. ...(to be continued.)

Extracts-Part-3

समय: 20.33-23.00

जिज्ञासु: शंकर द्वारा जो ज्ञान बरसात बरसती है...

बाबा: शंकर द्वारा ज्ञान की बरसात बरसती है? नहीं। रांग बात।

जिज्ञासु: शिवबाबा शंकर द्वारा।

बाबा: शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा। प्रजापिता ब्रह्मा अलग है। शंकर कहा जाता है तीनों के मेल को।

जिज्ञासु: ब्रह्मा द्वारा गरजता है, बरसता नहीं है बोला है।

बाबा: ब्रह्मा द्वारा बरसते नहीं हैं? प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बरसात नहीं होती है?

जिज्ञासु: होती है मगर तीनों के बारे में समझाया। विष्णु द्वारा जो ज्ञान बरसाते हैं...

बाबा: वो गरजता नहीं है, बरसता है। विष्णु जो है वो गरजने वाला नहीं है। प्रैक्टिकल जीवन है उसका। कोई बादल ऐसे होते हैं - गरजते हैं, बरसते नहीं।

जिज्ञासु: जो गरजते हैं वो बरसते नहीं।

बाबा: हाँ, जी।

Time: 20.33-23.00

Student: The rain of knowledge that falls through Shankar...

Baba: Does the rain of knowledge fall through Shankar? No. It is *wrong*.

Student: Shivbaba through Shankar.

Baba: Shivbaba through Brahma. Prajapita Brahma is separate. Shankar is said to be a combination of all the three.

Student: It has been said it thunders, but does not rain through Brahma.

Baba: Does it not rain through Brahma? Doesn't the rain fall through Prajapita Brahma?

Student: It takes place, but it has been explained about all the three [personalities]. The rain of knowledge that falls through Vishnu.

³ According to their rank

⁴ The symbolic representation of the male organ; in the path of *bhakti* it represents the incorporeal form of Shiva

Baba: He does not thunder, but rains. Vishnu does not thunder. He has a practical life. There are some clouds which thunder, but they do not rain.

Student: Those which thunder do not rain.

Baba: Yes.

जिज्ञासु: जो बरसते हैं वो पहाड़, पत्थर... जमीनों पर।

बाबा: कोई जरूरी नहीं। बरसने वाले अच्छी जमीन पर भी बरसते हैं। पथरीली जमीन पर भी बरसते हैं।

जिज्ञासु: ज्ञानी तू आत्मा विजयमाला को कहेंगे या रुद्रमाला को कहेंगे?

बाबा: ज्ञानी तू आत्मा वो है पक्का जो प्रैक्टिकल काम करके दिखाए। सुने भी, सुनाए भी, समझे भी, समझाए भी और प्रैक्टिकल कर्म करके भी दिखाए।

जिज्ञासु: इस हिसाब से तो फिर विजयमाला ही होंगे ना।

बाबा: तो विजयमाला में जाना नहीं है आपको?

जिज्ञासु: जाना है।

बाबा: फिर क्या बात ? लक्ष्य नहीं है विजयमाला में जाने का?

जिज्ञासु: अभी?

बाबा: हाँ, हाँ।

जिज्ञासु: अभी तो लक्ष्य तो है। पर नहीं...

बाबा: अभी नहीं जाएंगे? पहले रुद्रमाला के मणके तो बन जाएं। ये भी बात सही है। रुद्रमाला के ही मणके नहीं बनेंगे तो विजयमाला में पिरोये कैसे जाएंगे?

Student: Those which rain, fall on mountains, stones... lands.

Baba: It is not necessary. Those which rain, rain on fertile land also. They rain on stony land as well.

Student: Will the *Vijaymala* be called knowledgeable souls or will the *Rudramala* be called knowledgeable souls?

Baba: The one who performs a task in practice is a firm knowledgeable soul. The one who listens as well as narrates; the one who understands as well as explains and performs actions in practice.

Student: According to this, it will be the *Vijaymala* , will it not?

Baba: So, don't you have to go to the *Vijaymala*?

Student: We have to.

Baba: Then, what is wrong? Don't you have the aim to go to the *Vijaymala*?

Student: Now?

Baba: Yes, yes.

Student: Now we do have an aim. But not...

Baba: Will you not go now? First let us become the beads of the *Rudramala* itself. This is also correct. If you do not become the beads of the *Rudramala* itself, then how will you be threaded in the *Vijaymala*?

समय: 23.03-23.57

जिज्ञासु: मुरली में आया है बड़े चतुर सुजान होते हैं विदेशी।

बाबा: वो तो होते ही हैं। बाप को पहचान लेते हैं तो चतुर सुजान नहीं हुए? और एक भारतवासी हैं, भारत के कुंभकर्ण। भगवान आता है, सारा कार्य कराता रहता है और वो पड़े-पड़े? पड़े-पड़े अज्ञान नींद में सोते रहते हैं। उसको चतुरता कहेंगे? अभी भी उत्तर भारत में गंगा के किनारे पड़े हुए हैं। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) भाग जाना, लोप हो जाना। उड़न छू।

Time: 23.03-23.57

Student: It has been mentioned in the murli that the foreigners are very clever (*catur sujaan*).

Baba: They are definitely that. When they recognize the Father, are they not clever? And on the other side are the *Bharatwaasis* (residents of Bharat), the Kumbhakarnas of Bharat. God comes; He keeps enabling his entire task [to be done] and they keep lying in the slumber of ignorance. Will it be called cleverness? Even now they are lying on the banks of the Ganges in north India. (Student said something.) To run away, to disappear, to vanish.

समय: 24.01-30.05

जिज्ञासु: बाबा, ये समय चल रहा है शूटिंग में शूटिंग का। तो शूटिंग में शूटिंग का क्या मतलब है बाबा?

बाबा: यज्ञ के आदि में जब मॉडल भी नहीं बना था स्वर्ग का, तो मॉडल बनाने के लिए शूटिंग हुई या नहीं हुई? सन् 36 से लेकर 47 तक? वो आरंभिक शूटिंग हुई। बहुत कच्ची-कच्ची। और सन् 47 में स्वर्ग का मॉडल कराची में बनके खड़ा हो गया, जिसकी यादगार अजमेर में दिखाई गई है। कितना टाइम लगा? दस साल लगा। ऐसे ही जो आदि में होता है वो अंत में भी होता है। अंत में है प्रैक्टिकल शूटिंग। इसका भी फाउन्डेशन लगने में दस साल लगते हैं।

Time: 24.01-30.05

Student: Baba, this is the time for shooting within shooting. So, what is meant by shooting within shooting Baba?

Baba: In the beginning of the *yagya*, when even the *model* of heaven was not made, did the shooting to prepare the *model* take place or not from the year 36 to 47? That was the initial shooting which took place. [It was a] very imperfect [shooting]. And the *model* of heaven was prepared in Karachi in the year 47; its memorial is shown in Ajmer. How much *time* did it take? It took ten years. Similarly, whatever happens in the beginning happens in the end as well. There is *practical shooting* in the end. It takes ten years for its *foundation* to be laid, too.

ब्राह्मणों की एडवांस दुनिया में चारों युगों की शूटिंग का काल कब पूरा हुआ? (जिज्ञासु - 2004-05 में।) 1998 में द्वापरयुग शूटिंग पूरी हुई। तो आठ साल लगे द्वापरयुगी शूटिंग में। बारह साल लगे त्रेतायुगी शूटिंग को। ऐसे ही कलियुगी शूटिंग को कितना समय लगा? (जिज्ञासु - चार साल।) 2000, 2001, 2002, 2003 (जिज्ञासु - चार।) चार साल लगे।

द्वापरयुगी शूटिंग के आठ साल। और त्रेता के 12 और सतयुगी शूटिंग के 16 साल। शास्त्रों में भी यही क्रम दिखाया है। कलियुग से द्वापर की आयु दुगुनी। त्रेता की आयु तिगुनी और सतयुग की आयु चौगुनी दिखाई गई है। वास्तव में है तो चारों युगों की आयु बराबर। परन्तु शूटिंग पीरियड में जो शूटिंग हुई है उस टाइम का हिसाब उन्होंने शास्त्रों में लिख दिया है क्योंकि मकान का चाहे चैतन्य मकान हो, दुकान हो, कोई किला हो, और चाहे जड़ हो उसका फाउन्डेशन जमाने में टाइम ज्यादा लगता है या ऊपर की माड़िया बनाने में टाइम लगता है? (जिज्ञासु - फाउन्डेशन में ज्यादा टाइम।) बनाने वाले भी एक्सपर्ट होते जाते हैं। उनकी प्रैक्टिस बढ़ती जाती है या घटती है? (जिज्ञासु - बढ़ती जाती है।) प्रैक्टिस बढ़ जाती है तो काम जल्दी-जल्दी करते हैं अनुभवी होने के कारण। और टाइम भी कम लगता है। तो ऐसे ही 16 साल, 12 साल, 8 साल और 4 साल। 2003 कलियुगी शूटिंग का टाइम पूरा हो जाता है। और एक वर्ष रंग का 2004। अब इसमें दस साल वो ही आदि वाले फिर जोड़ दो।

When did the period for the *shooting* of all the four ages finish in the world of the advance Brahmins? (Student: In 2004-05.) The shooting of the Copper Age finished in 1998. So, it took eight years for the shooting of Copper Age. It took twelve years for the shooting of the Silver Age. Similarly, how many years did it take for the shooting of the Iron Age? (Student: Four years.) 2000, 2001, 2002, 2003 (Student: Four.) It took four years. [It takes] eight years for the shooting of the Copper Age, 12 years for [the shooting of] the Silver Age; and 16 years for the shooting of the Golden Age. This sequence has been shown in the scriptures as well. The duration of the Copper Age is double the duration of the Iron Age. The duration of the Silver Age is thrice [longer than the duration of the Iron Age] and the duration of the Golden Age is shown to be four times [longer than that of the Iron Age]. Actually, the duration of all the four ages is equal. But they have written the account of the time that was taken for the shooting that took place in the shooting period because a building... whether it is a living building, a shop, a fort or any non-living [thing]; does it take more time to lay its foundation or does it take more time to build the upper stories? (Student: It takes more time to lay the foundation.) The builders also go on becoming *expert*. Does their *practice* increase or decrease? (Student: It goes on increasing.) Their *practice* increases, so they perform their task quickly because of being experienced. And what about the *time* as well? It takes lesser time. So, similarly, 16 years, 12 years, 8 years and 4 years. The time for the shooting of the Iron Age gets over [in] 2003. And the one extra year of 2004; well, add the ten years of the beginning to this.

वहाँ तो मॉडल बना था। वो दिखावे का मॉडल था या सच्चा था? (जिज्ञासु - दिखावे का।) कराची में जो स्वर्ग स्थापन हुआ, इतना मारामारी हुई, कोई को कहीं खरोंच नहीं आई। पाकिस्तान के लोग उनको खुदाई खिदमतगार बोलते थे। उन बच्चों की पूरी सुरक्षा हुई। तो जो मॉडल था, जड़ मॉडल, जड़त्वमयी बुद्धियों द्वारा बनाया हुआ मॉडल, जिसकी यादगार भक्तिमार्ग में अजमेर में दिखाई जाती है। वहाँ ब्रह्मा का मन्दिर भी दिखाते हैं। जड़ मॉडल बनाने वाला कौन? ब्रह्मा। ऐसे ही जो चैतन्य मॉडल है उसकी भी शूटिंग होने में फाउन्डेशन पीरियड में ये दस साल का टाइम नून्धा हुआ है।

There a *model* was prepared. Was that an artificial *model* or was it a true model? (Student: Artificial.) As regards the heaven that was established in Karachi, so much bloodshed took place, but nobody suffered even a scratch. The people of Pakistan used to call them the servants of *Khuda* (God). Those children were protected completely. So, the *model*, the non-living *model*, the *model* that was prepared by those with an inert intellect, its memorial is shown in Ajmer in the path of *bhakti*. The temple of Brahma is also shown there. Who constructed the non-living *model*? Brahma. Similarly, ten years time is fixed for the shooting (rehearsal) of the living model as well in the *foundation period*.

समय: 30.10-31.15

जिज्ञासु: ज्ञानयुक्त याद निर्सकल्प स्थिति।

बाबा: ज्ञानयुक्त याद? ज्ञान का सार क्या है? सारा ज्ञान जो इतने विस्तार में है, सारा का इतना बड़ा-बड़ा झाड़ है, सारा सागर है, उसका सार क्या है? बिन्दी। ज्ञान का सार क्या है? बिन्दी। ये ही ज्ञानयुक्त याद है। सार बीज को कहा जाता है।

Time: 30.10-31.15

Student: Remembrance with knowledge, the stage beyond thoughts.

Baba: Remembrance with knowledge (*gyaanyukt yaad*)? What is the essence of knowledge? What is the essence of the entire knowledge that has expanded so much, this entire huge tree, the entire ocean? A point. What is the essence of the knowledge? A point. This itself is the remembrance with knowledge. The seed is called essence. ... (to be continued.)

Extracts-Part-4

समय: 31.20-32.35

जिज्ञासु: बी.के. में जो भी हैं, वो कोमल स्वभाव वाले होते हैं।

बाबा: बी.के. में कोमल स्वभाव संस्कार के होते हैं? कठोर स्वभाव-संस्कार के नहीं होते, जो अत्याचार करने वाले हों? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) माने बी.के. में जो आधारमूर्त ब्राह्मणों की दुनिया है उसमें कठोर जड़ें नहीं हैं? सिर्फ सनातन धर्म की ही जड़ें हैं चन्द्रवंशियों की? चन्द्रवंशी तो दस-बारह परसेन्ट ही हैं। बाकी तो सब दूसरे-दूसरे वंश के हैं। अलग-अलग धर्मों के नारायण कौन हैं? कहाँ हैं? वो बी.के. में ही हैं। ऐसे थोड़े ही वहाँ सब कोमल स्वभाव के हैं।

Time: 31.20-32.35

Student: Everyone among the BKs have a gentle nature.

Baba: The BKs have gentle nature and *sanskars*? Are there not those with harsh nature and *sanskars*, who commit atrocities? (Student said something.) Does it mean that are there no harsh roots among the BKs, i.e. the world of the root like Brahmins? Are there only the roots of the Ancient Religion, of the *Candravanshis*? The *Candravanshis* are just ten-twelve percent. Others belong to other dynasties. Who are the Narayans of different religions?

Where are they? They are among the BKs themselves. It is not that all of them there have a soft nature.

समय: 32.40-33.47

जिज्ञासु: स्वर्णिम संगम।

बाबा: स्वर्ण कहा जाता है सतयुग को। सोने जैसी दुनिया कौनसी है? सतयुग। रजत दुनिया। चांदी जैसी दुनिया त्रेतायुग। तो सतयुग में जो दुनिया है वो दुनिया का फाउण्डेशन कहाँ पड़ता है? कौनसे युग में? संगमयुग में फाउण्डेशन पड़ता है। तो जहाँ फाउण्डेशन पड़ता है नई दुनिया का वो ही स्वर्णिम संगमयुग है।

दूसरा जिज्ञासु: स्वर्णिम संगमयुग बोल रहे हैं ना बाबा। संगमयुग तो हीरे जैसा है।

बाबा: वो ऐसा स्वर्णिम जिसमें हीरे जड़े हुए हैं। हीरों का हार। सिर्फ हीरों का हार होता है या सोने के साथ जड़ित वाला हार होता है?

जिज्ञासु: जड़ित वाला।

बाबा: हाँ, जी।

Time: 32.40-33.47

Student: *Swarnim sangam* (Golden Confluence Age).

Baba: The Golden Age (*Satyug*) is called *swarn* (gold). Which world is like gold? The Golden Age. The silver world, silver like world [is] the Silver Age (*Tretayug*). So, where is the *foundation* of the Golden Age world laid? In which age? The *foundation* is laid in the Confluence Age. So, the time when the *foundation* for the new world is laid is itself the *swarnim sangamyug*.

Another student: Baba is saying the Golden Confluence Age [but] the Confluence Age is like diamond, isn't it?

Baba: It is such gold which is embedded with diamonds. Is a diamond necklace made of just diamonds or is it a golden necklace studded with diamonds?

Student: It is studded.

Baba: Yes.

समय: 33.48-36.27

जिज्ञासु: बाबा, कहा जाता है जैसी करनी वैसी भरनी। तो क्या हम विस्तार से पहचान सकते हैं कि क्या कर्म किए होंगे जिससे हम ये...?

बाबा: श्रीमत तो मिली हुई है। श्रीमत के अनुकूल कर्म किए होंगे तो अच्छी भरनी और श्रीमत के बरखिलाफ मनमत पर या मनुष्यों की मत पर कर्म किये होंगे तो खराब भरनी।

जिज्ञासु: विस्तार में मालूम होगा क्या?

बाबा: इतना विस्तार में रोज़ मुरली सुनाई जाती है। और ज्यादा विस्तार चाहिए? सारे कर्मों की ही तो गुह्य गति बताई जाती है मुरली में। और क्या बताया जाता है?

जिज्ञासु: पर भरनी अनेक रूपों में होती है ना।

बाबा: हाँ, हाँ। जो कर्म करेंगे, जो कर्म करेंगे उसको भरना नहीं पड़ेगा?

जिज्ञासु: कुछ रोग के रूप में होते हैं।

बाबा: तो दूसरे के शरीर को दुःख दिया है तो रोग नहीं आवेगा? शरीर को शारीरिक दुःख देंगे तो रोग आवेंगे। औषधालय खोलेंगे तो निरोगी बनेंगे।

Time: 33.48-36.27

Student: Baba, it is said that as are the actions [we perform] so are the fruits. So, can we know in detail, what kind of actions we performed that we....

Baba: You have received the *shrimat*. If you will have performed actions according to *shrimat*, you will reap good fruits. And if you will have performed actions against the *shrimat* on the opinion of your mind or the opinion of human beings, you will reap bad results.

Student: Can we know in detail?

Baba: The murlis is narrated so much in detail every day. Do you want something in more detail? It's just the deep dynamics of all the actions that are narrated in the murlis. What else is narrated?

Student: But the fruits are in different forms, aren't they?

Baba: Yes, yes. Will you not have to face the consequences of the actions that you perform?

Student: Some are in the form of diseases.

Baba: So if you have given sorrow to the bodies of others, will you not suffer from diseases? If you give physical sorrow to the body, you will suffer from diseases. If you open hospitals, you will become healthy.

जिज्ञासु: शरीर के रोगों में विभिन्न प्रकार के हैं।

बाबा: जो भी विभिन्न प्रकार के रोग हैं वो पैदा किये हुए किसके हैं? हमने खुद ही पैदा किये हैं। प्रकृति के बरखिलाफ जब हम चलते हैं तो प्रकृति में प्राकृतिक रूप से अनेक प्रकार की विकृतियाँ पैदा हो जाती हैं। ये शरीर की प्रकृति है। मनुष्य का स्वभाव संस्कार बिगड़ता है तो शरीर की प्रकृति भी बिगड़ती है।

जिज्ञासु: और ये भी देखते हैं कि पशुओं का एक्सीडेंट भी होता है।

बाबा: पशुओं का?

जिज्ञासु: पशुओं का।

बाबा: हाँ, जी।

जिज्ञासु: उनसे मनुष्यों से क्या संबंध है?

बाबा: क्यों? मनुष्य जानवर पालता नहीं है? जानवरों को पाल करके, दुःख-सुख जानवरों से नहीं लेता है? जानवरों से दुख भी लेता है और सुख भी लेता है। तो हिसाब-किताब बनेगा या नहीं बनेगा? जरूर बनेगा। बाकी ऐसा हिसाब-किताब नहीं बनेगा कि जानवर योनि में जन्म लेना पड़े।

Student: There are different kinds of diseases of the body as well.

Baba: Who has created all the different kinds of diseases? We have created them ourselves. When we act against the nature, then many kinds of disorders emerge in the nature naturally. This is the nature of the body. When the nature and *sanskars* of human beings spoil, then the nature of the body also spoils.

Student: And we also see that animals meet with accidents.

Baba: Animals?

Student: The animals.

Baba: Yes.

Student: What is their relation with the human beings?

Baba: Why? Don't human beings rear animals? Does he not obtain sorrow and happiness from the animals by rearing them? He obtains sorrow as well as happiness from the animals. So, will he develop karmic accounts with them or not? He will definitely develop [karmic accounts]. But he will not develop such karmic accounts that he has to be born in the animal species.

समय: 36.28-37.50

जिज्ञासु: बाबा, जीवात्मा कहते हैं। परन्तु परमात्मा भी संगमयुग में आते हैं तो जीव परमात्मा कहना चाहिए।

बाबा: परमात्मा, परमपिता, गॉड फादर कभी मरता भी है? (जिज्ञासु - नहीं मरता।) मरता कौन है? जिसका अपने शरीर में लगाव होता है वो मरता है। और परमपिता परमात्मा का तो शरीर में लगाव होता ही नहीं। तो मरेगा क्या? जो जन्म लेता है सो मरता है। पांच तत्वों के शरीर से परमात्मा जन्म लेता है क्या? नहीं। वो तो प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेता है। बेहद की बात है। हृद का जन्म तो होता नहीं जो मृत्यु हो हृद की। मृत्यु शरीर की होती है। प्रजापिता का शरीर है। ब्रह्मा का शरीर है। वो मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसे थोड़े ही कि ब्रह्मा ने शरीर छोड़ दिया तो परमात्मा मर गया।

Time: 36.28-37.50

Student: Baba, it is said *jiivaatmaa* (a living soul). But when the Supreme Soul comes in the Confluence Age, it should be said *jiiv Parmatma*.

Baba: Does the Supreme Soul, the Supreme Father, God the Father ever die? (Student: He doesn't die.) Who dies? The one who has attachment for his body dies. And the Supreme Father Supreme Soul does not have any attachment to the body at all. So, why will He die? The one who is born dies. Is the Supreme Soul born through the body made of the five elements? No. His birth in the form of revelation takes place. It is an unlimited topic. His limited birth does not take place at all that He dies in the limited. It is the body which dies. Prajapita has a body. Brahma has a body. It is he who dies. It is not that the Supreme Soul died when Brahma left his body. ...(to be continued.)

Extracts-Part-5

समय: 00.01-03.42

जिज्ञासु: आत्मा जब शरीर छोड़ती है तो मन-बुद्धि और संस्कार को भी ले के जाती है क्या? ...

बाबा: मन आत्मा ले के नहीं जाती है। आत्मा स्वयं ही मन-बुद्धि-संस्कार सहित है। मन बुद्धि संस्कार को ही आत्मा कहा जाता है। मन संकल्प-विकल्प करने वाला। वो शक्ति आत्मा की

ही है। और फैसला करना, निर्णय करना ये भी शक्ति आत्मा की है। और आत्मा में ये जो दोनों शक्तियाँ हैं, संकल्प शक्ति और फैसला करने की शक्ति, परखने की शक्ति। ये दोनों शक्तियाँ संस्कारों को अपने में तिरोहित करती रहती हैं। जैसे-जैसे कर्म करते हैं वो संस्कार भरते ते रहते हैं। अच्छे काम करेंगे तो अच्छे संस्कार, बुरे काम करेंगे तो मन-बुद्धि में बुरे संस्कार समाते रहते हैं। तो संस्कारों का जखीरा आखरी जन्म में इकट्ठा हो गया। अब ये रील घूम रही है 63 जन्मों की। जैसे-जैसे हमने कर्म किये हैं 63 जन्मों में वो अभी हमारे सामने आ रहे हैं संकल्पों के रूप में, स्वप्न के रूप में। हम पुरुषार्थ अच्छा करना चाहते हैं, पुरुषार्थ हम अच्छा करना चाहते हैं लेकिन खराब संस्कार उदय हो जाते हैं तो अच्छा पुरुषार्थ हो ही नहीं सकता। इतने प्रबल संस्कार होते हैं।

Time: 00.01-03.42

Student: When a soul leaves its body, then does it take the mind, intellect and *sanskars* with it as well? ...

Baba: A soul does not take the mind with it. The soul itself consists of the mind, intellect and *sanskars*. The mind, intellect and *sanskars* are together called the soul. Mind creates good and bad thoughts. That power belongs only to the soul. And to make decisions, to judge is also the power of the soul. And both the powers of the soul, the thought power and the power to make decisions, the power to discern; both these powers [help to] assimilate *sanskars* in us. The *sanskars* keep being recorded [in the soul] according to the actions we perform. If we perform good deeds, we will imbibe good *sanskars*; if we perform bad deeds, then bad *sanskars* keep filling in the mind and intellect. So, the *sanskars* have piled up in the last birth. Now this reel of 63 births is rotating. The actions that we have performed in the 63 births are coming in front of us in the form of thoughts, dreams now. We wish to make good *purusharth*, we wish to make nice *purusharth*, but when the bad *sanskars* emerge, then we cannot make nice *purusharth* at all. The *sanskars* are so strong.

इन तीन संस्कारों के विस्तार को दिखाने के लिए तीन मूर्तियाँ बताय दी हैं। क्या? ब्रह्मा मूर्ति मन की यादगार है। और शंकर तीसरा नेत्र बुद्धि की यादगार है। और इनमें भी परिवर्तन करने वाला कौन? (जिज्ञासु - विष्णु।) वो विष्णु को दिखाया है कि आखरीन में संस्कार परिवर्तन होंगे कैसे? तो आत्मा से संस्कार, बुद्धि अलग नहीं हैं। मन, बुद्धि को ही आत्मा कहा है। वेदों में भी कहा हुआ है- मनरेव आत्मा। आत्मा मन ही है और कुछ नहीं है। लेकिन मनुष्य की आत्मा मन है या भगवान की आत्मा मन है? मनुष्य की आत्मा मन है। मन चलायमान होता है तो मनुष्य कहा जाता है। मनुष्य का मन अगर चलायमान होना बंद हो जाए तो क्या कहा जाएगा? अमन चैन में रहने वाला देवता।

To show the expanse of these three *sanskars*, three personalities have been described. What? The personality of Brahma is a memorial of the mind. Shankar is a memorial of the third eye, the intellect. And who brings transformation among them as well? (Student: Vishnu.) Vishnu has been shown for that. How will the transformation of *sanskars* take place at last? So, *sanskar* and intellect are not separate from the soul. The mind and intellect itself has been called the soul. It has been said in the Vedas as well: *Manrevaatma*. The soul is just the mind.

It is nothing else. But is the soul of the human being mind or is the soul of God mind? The soul of the human being is mind. When the mind becomes inconstant, he is called a human being. If the mind of the human being stops becoming inconstant, then what will he be called? The deity who remains in peace and comfort.

समय: 03.48-04.22

जिज्ञासु: बाबा, अर्जुन तो पूरा भगवान की श्रीमत पर चलता था।

बाबा: पूरा चलता था?

जिज्ञासु: हाँ।

बाबा: पूरा चलता था तो मना क्यों कर दिया? युद्ध करने के लिए मना क्यों कर दिया अर्जुन ने? पूरा ही श्रीमत पर तो नहीं चलता। पूरा श्रीमत पर चलता होता तो सीधा ही स्वर्ग में जाता। वो तो युधिष्ठिर ही गया स्वर्ग में। अर्जुन कहां गया स्वर्ग में? वो तो बीच में ही लुढ़क गए।

Time: 03.48-04.22

Student: Baba, Arjun used to follow the *shrimat* of God completely.

Baba: Did he used to follow it completely?

Student: Yes.

Baba: If he used to follow it completely, why did he say no? Why did Arjun refuse to fight the war? He did not follow the *shrimat* completely. Had he followed the *shrimat* completely, he would have gone directly to heaven. Only Yudhishtir went to heaven. Arjun did not go to heaven. He tumbled in between.

समय: 04.25-05.05

जिज्ञासु: बाबा, शिव का परमानेन्ट रथ तो हमारे सामने है अभी।

बाबा: अच्छा?

जिज्ञासु: हाँ। फिर परमानेन्ट रथ साकार में है तो अभी से परमानेन्ट रथ को याद करना अच्छा है ना?

बाबा: नहीं-नहीं, पक्का कर लो फिर याद करो। ☺ अभी से क्यों याद करना? जब तक पक्का न हो जाए, निश्चित न हो जाए फिर याद क्यों करना? बेकार चला जाएगा याद करना।

जिज्ञासु: नहीं, निश्चित हैं।

बाबा: पूछते काहे के लिए फिर? कुछ संशय है तभी तो पूछा जाता है।

जिज्ञासु: संशय नहीं।

बाबा: अच्छा चलो।

Time: 04.25-05.05

Student: Baba, the permanent chariot of Shiva is in front of us now.

Baba: *Accha?*

Student: Yes. When the permanent chariot is in a corporeal form, then it is good for us to remember the permanent chariot from now itself, isn't it?

Baba: (Sarcastically :) No, no. First make sure, then remember [him]. ☺ Why should you remember [him] from now itself? As long as you are not sure, you are not definite, why should you remember [him]? Remembering [him] will go waste.

Student: No. We are carefree.

Baba: Why do you ask then? Someone asks [something] only when he has a doubt [regarding it].

Student: There is no doubt.

Baba: OK, that's fine.

समय: 05.09-07.05

जिज्ञासु: बाबा, जो सीढ़ी का चित्र है ना, उसमें त्रेता के अंत में 3 सीढ़ियाँ खण्डित दिखाई गई हैं। तो नष्ट देव तो चार हैं।

बाबा: नष्ट देव चार हैं। एक तो उनमें जैसे है ही नहीं। क्या? उनमें एक जो है वो अष्ट देव में भी नहीं है और नष्ट देव में भी नहीं है। वो उनकी वैल्यू को दिखाने के लिए बीच में रख दिया है। क्या? जैसे अष्ट रतन होते हैं ना। एक दूसरे से ज्यादा वैल्यू वाले। लेकिन उनमें, उनकी वैल्यू को दिखाने के लिए एक ऐसा है जिसकी कोई वैल्यू नहीं। बहुत मिल जाता है। पुखराज। वो पुखराज अष्ट देव में भी नहीं है तो नष्ट देव में भी नहीं है। इतनी भी ताकत नहीं रखता कि जो नष्ट देवों के साथ मिल करके नष्ट होने का कार्य कराय सके। शक्तिहीन।

Time: 05.09-07.05

Student: Baba, in the picture of the ladder, three steps have been shown to be incomplete in the end of the Silver Age. But there are four *nasht dev* (deities of destruction).

Baba: The *nasht dev* are four. Among them one is almost non-existent. What? Among them one is not included among the eight deities; he is not included among the *nasht dev* either. It has been placed among them in order to show their *value*. What? For example, there are eight gems, aren't there? One is more valuable than the other. But among them one is such that it holds no *value*, in order to show their value. Many can be found. It is *Pukhraj* (Topaz). That *Pukhraj* is not included either among the eight deities or the *nasht dev*. He does not even have the power to side with the *nasht dev* and enable [them to do] the task of destruction. [He is] powerless.

जिज्ञासु: फिर वो सूर्य वंश के गुप में कैसे आते हैं?

बाबा: बस उसको दूसरों की वैल्यू को दिखाने के लिए दिखाया गया है।

जिज्ञासु: लेकिन उनका पुरुषार्थ तो वैसा होगा ना?

बाबा: पुरुषार्थ तो सबसे नीचा हो गया। वो मणका 12 मणकों में कैसा मणका हुआ? निम्न कोटि का मणका हो गया। वास्तव में 3 ही नष्ट करने का कार्य करते हैं। इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन। और इनके सब दूसरे-दूसरे धर्म छेड़े हैं, सहयोगी धर्म हैं।

Student: Then how does he come in the group of the Sun dynasty?

Baba: It has been shown just to show the value of others.

Student: But their *purusharth* will be like that, will it not?

Baba: Its *purusharth* is the lowermost. What kind of a bead is it among the 12 beads? It is the lowest category bead. Actually, only three [souls] perform the task of bringing destruction. The people of Islam, the Buddhists and the Christians. All other religions are their branches, helper religions. ... (to be continued.)

Extracts-Part-6

समय: 08.18-10.25

जिज्ञासु: बाबा, कैसट नम्बर - ... में बताया है कि फर्स्ट ब्रह्मा जो बताया है, प्रथम ब्रह्मा, पहला ब्रह्मा, प्रजापिता। सेकण्ड ब्रह्मा छोटी माता।

बाबा: पहला ब्रह्मा प्रजापिता? अगर प्रजापिता पहला ब्रह्मा है तो प्रजापिता को पहला ब्राह्मण क्यों कहा? पहले ब्रह्मा कि पहले ब्राह्मण?

जिज्ञासु: पहले ब्राह्मण बना।

बाबा: ब्राह्मण बिना ब्रह्मा के कैसे बन जावेगा? ब्राह्मण बने बिगर प्रजापिता था क्या? प्रजापिता पहले तो ब्राह्मण बने। ब्राह्मण तब बने जब ब्रह्मा की औलाद बने। ब्रह्मा जो नाम है वो समझने-समझाने वाला है या सुनने-सुनाने वाला है? (जिज्ञासु - सुनने-सुनाने वाला।) तो सुनने-सुनाने का काम तो कोई भी कर लेगा।

जिज्ञासु: नहीं, ब्रह्मा को जो साक्षात्कार हुए उसका रहस्य खोल दिया।

बाबा: क्या खोल दिया?

जिज्ञासु: रहस्य।

Time: 08.18-10.25

Student: Baba, it has been said in the cassette No. ... that the first Brahma is Prajapita. The second Brahma is the junior mother.

Baba: Is the first Brahma Prajapita? If Prajapita is the first Brahma, why was he called the first Brahmin? Is Brahma first or is a Brahmin first?

Student: He became a Brahmin first.

Baba: How can he become a Brahmin without Brahma? Was he Prajapita without becoming a Brahmin? Prajapita should become a Brahmin first. He will become a Brahmin when he becomes the child of Brahma. Is Brahma the name of the one who understands and explains or the one who listens and narrates? (Student: The one who listens and narrates.) Anyone will do the task of listening and narrating.

Student: No, he opened the secrets of the visions that Brahma had.

Baba: What did he open?

Student: Secret.

बाबा: ब्रह्मा का जो रहस्य खोला वो तो समझने समझाने की बात हो गई। वो तो प्रजापिता के द्वारा हुआ।

जिज्ञासु: वो एक नंबर हो गया।

बाबा: प्रजापिता तो पहला ब्राह्मण है, पहला ब्रह्मा नहीं है। प्रजापिता को भी सुनाने वाला कोई और है। क्या? (जिज्ञासु - आदि ब्रह्मा।) हाँ।

दूसरा जिज्ञासु: बाबा, फिर गीता माता फर्स्ट ब्रह्मा हो गई ना।

बाबा: अब गीता माता भी कोई एक है? एक झूठी गीता एक सच्ची गीता, गीताएं भी तो दो हो गईं। एक गीता सुनने-सुनाने का काम करती है और एक गीता प्रैक्टिकल में परिवर्तन का कार्य करती है। तो कौनसी सच्ची गीता हुई? (जिज्ञासु - परिवर्तन करने वाली।) परिवर्तन करने वाली जो सच्ची गीता है वो एक सेकण्ड में ब्रह्मा सो विष्णु बनाय देती है।

Baba: As regards opening the secrets [of the visions] of Brahma, it was about understanding and explaining. That happened through Prajapita.

Student: He became the No.1 [Brahma].

Baba: Prajapita is the first Brahmin, not the first Brahma. The one who narrates to Prajapita as well is someone else. What? (Student: The first Brahma.) Yes.

Student: Baba, then mother Gita became the first Brahma, didn't she?

Baba: Well, is there one mother Gita? There is a false Gita and a true Gita, the Gitas are also two. One Gita performs the task of listening and narrating and the other Gita performs the task of transformation in practice. So, which one is the true Gita? (Student: The one who brings about transformation.) The true Gita who brings about transformation enables Brahma to become Vishnu in a second.

समय: 10.26-12.45

जिज्ञासु: बाबा, युधिष्ठिर सीधा स्वर्ग में गया।

बाबा: युद्ध में स्थिर रहेंगे तो सीधे ही शरीर से स्वर्ग में जाएंगे।

जिज्ञासु: तो युधिष्ठिर तो ब्रह्मा को बताए।

बाबा: हाँ।

जिज्ञासु: कहाँ गया वो सीधा स्वर्ग में?

बाबा: वो ब्रह्मा की बात थोड़े ही है। ब्रह्मा वो अक्वल नंबर आपने मान लिया? (जिज्ञासु - नहीं।) उस ब्रह्मा को आपने अक्वल नंबर मान लिया? मान तो लिया। तभी तो कह रहे हैं। दादा लेखराज अक्वल नंबर ब्रह्मा है क्या? (सभी - नहीं।) नहीं है। अक्वल नंबर ब्रह्मा तो वो है जो अक्वल नंबर विष्णु बनता है। (जिज्ञासु - प्रजापिता।) प्रजापिता भी अक्वल नंबर ब्रह्मा नहीं है। पहले ब्रह्मा या पहले ब्राह्मण? (जिज्ञासु - पहले ब्राह्मण।) ब्राह्मण पहले? ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण कहा जाता है। माने ब्राह्मण बनाने वाला कोई ब्रह्मा भी होना चाहिए।

Time: 10.26-12.45

Student: Baba, Yudhishtir went directly to heaven.

Baba: If you remain constant (*sthir*) in war (*yuddh*), you will go directly to heaven through this body.

Student: So, Brahma has been described as Yudhishtir.

Baba: Yes.

Student: He didn't go directly to heaven.

Baba: It is not about that Brahma. Did you consider that Brahma to be the No.1 Brahma? (Student: No.) Did you consider that Brahma to be the No.1 Brahma? You did consider him [to be that]. It is only then that you are saying [this]. Is Dada Lekhraj the No.1 Brahma? (Everyone said: No.) He isn't. The one who becomes the No.1 Vishnu is the No.1 Brahma. (Student: Prajapita.) Prajapita isn't the No.1 Brahma either. Is Brahma first or is a Brahmin first? (Student: A Brahmin is first.) Is a Brahmin first? Brahma's child is called a Brahmin. It means that there should also be a Brahma who makes Brahmin.

जिज्ञासु: तो अर्जुन क्यों? अर्जुन गया नहीं बताया।

बाबा: अर्जुन? ये तो बताया कि पांच प्रकार के पाण्डव हैं। एक तो सूर्यवंशी। उनका हेड बता दिया युधिष्ठिर। दूसरे भीम। उनका मुखिया बता दिया... (जिज्ञासु - शंकर।) हाँ, जी। और... (जिज्ञासु - तीसरा अर्जुन।) अर्जुन। जिसने पुरुषार्थ का अर्जन किया। फिर? नकुल। न इस कुल का न उस कुल का। देवता भी नहीं बन पाए और पक्के विदेशी भी नहीं बन पाए। और फिर सहदेव। देवता खुद तो नहीं बने लेकिन देवताओं का सदैव सहयोग दिया। तो ये पाँचों प्रकार के पाण्डव ही गए जिन्होंने राइटियस पार्ट बजाया है। लेफ्टिस्ट पार्ट नहीं बजाया है। जो लेफ्टिस्ट पार्ट बजाने वाले हैं वो कौरव और यादव हो गए।

Student: So, why [not] Arjun? It is said that Arjun did not go [to heaven]?

Baba: Arjun? It was said that there are five kinds of Pandavas. One is *Suryavanshi*⁵. Their head was said to be Yudhishtir. Second is Bhim. His chief was said to be... (Student: Shankar.) Yes. And... (Student: Third is Arjun.) Arjun. The one who accumulates [fruit] through *purusharth* (spiritual effort). Then? Nakul. The one who belongs neither to this clan nor to that clan. He could not become either a deity or a firm foreigner (*videshi*). And then Sahdev. He himself did not become a deity but he always helped the deities. So, these are the five kinds of Pandavas, who played a *righteous part*. They did not play a *leftist part*. Those who play a *leftist part* are the Kauravas and the Yadavas.

समय: 12.49-14.30

जिज्ञासु: शंकर जब शिव समान बन जाता है , वही शिव का प्रैक्टिकल जन्म है क्या?

बाबा: प्रत्यक्षता किसकी होगी? जो गुप्त है उसकी प्रत्यक्षता होनी है। क्या? जो गुप्त है उसकी प्रत्यक्षता होनी है। अब एक ऊपर वाली सोल, एक नीचे आलराउण्डर पार्ट बजाने वाली सोल। नीचे आलराउण्डर पार्ट बजाने वाली सोल भी सारी मनुष्य सृष्टि का पिता है। जगतपिता। क्या ढाई हजार वर्ष की हिस्ट्री में किसी ने उसको पहचाना क्या? (जिज्ञासु - नहीं।) इस सृष्टि पर तो रही कि नहीं रही? (जिज्ञासु - रही।) इस सृष्टि पर हीरो पार्ट बजाया या नहीं बजाया? (जिज्ञासु - बजाया।) बजाया लेकिन फिर भी किसी ने पहचाना नहीं। ऊपर वाला जो सर्वशक्तिवान है वो भी इस सृष्टि पर आता है। वो भी गुप्त। तो दोनों की प्रत्यक्षता एक-दूसरे के सहयोग से होती है। अगर ऊपर वाला न आवे तो प्रजापिता की पहचान नहीं होगी। अगर

⁵ Belonging to the Sun dynasty

प्रजापिता न हो तो ऊपर वाले को कोई पहचानेगा नहीं। अरस-परस है। एक भोक्ता, भोगी और एक अभोक्ता।

Time: 12.49-14.30

Student: When Shankar becomes equal to Shiva, is that itself the birth of Shiva in practice?

Baba: Who will be revealed? The one who is hidden is to be revealed. What? The one who is hidden is to be revealed. Well, one is the *soul* from above; the other is the *soul* that plays an all round part below. The *soul* that plays an all round part below is also the father of the entire human world. The father of the world (*Jagatpita*). Did any one recognize him in the 2500 years of *history*? (Student: No.) Did he remain in this world or not? (Student: He did.) Did he play the part of a hero in this world or not? (Student: He played.) He played, yet, nobody recognized him. The above One, the Almighty also comes to this world. He too is hidden. So, the revelation of both takes place with the help of each other. If the above One does not come, Prajapita will not be recognized. If there is no Prajapita, nobody will recognize the above One. They are inter dependent. One is *bhokta* (the one who seeks pleasure), *bhogi* and the other is *abhokta*. ... (to be continued.)

Extracts-Part-7

समय: 14.40-17.15

जिज्ञासु: बाबा, एडवांस पार्टी को वरदान दिया ना एक ज्ञान में आएंगे तो परिवार वाले सब आएंगे। तो क्या टू लेट का बोर्ड लगने से पहले आएंगे?

बाबा: ज्ञान में आएंगे। जो पहली-पहली डिनायस्टी है दुनिया की उसकी भी विशेषता है। क्या विशेषता है? कि जो भी प्रजावर्ग के लोग होंगे वो सब ज्ञानी तू आत्मा होंगे। सब ज्ञान में चलने वाले होंगे। अब प्रजावर्ग वाली आत्माएं कोई राजपद थोड़े ही पाती हैं। तो...

दूसरा जिज्ञासु: बाबा, तो फिर 9 लाख होंगे ना?

बाबा: 9 लाख जिन्दा रहेंगे?

दूसरा जिज्ञासु: 9 लाख होंगे ना।

बाबा: 9 लाख जिन्दा रहेंगे? जिन्दा कितने रहेंगे? (जिज्ञासु - साढ़े चार लाख।) साढ़े चार लाख ही हैं। तो साढ़े चार लाख जो हैं वो सब ज्ञानी तू आत्माएं होंगे। अब वो आज ज्ञान में चलें या बाद में ज्ञान में चलें। जब टू लेट का बोर्ड लग जाएगा तो ज्ञान में तो चलेंगे, ज्ञानी आत्माओं में गिनती तो होगी उनकी, ज्ञान में उनका रस बढ़ जावेगा, लेकिन ऊंच पद नहीं पाएंगे।

जिज्ञासु: उससे पहले आएंगे क्या?

बाबा: माता कहती कि हमारे घर वाले ऊंच पद भी आना चाहिए। हम लक्ष्मी-नारायण बनें न बनें घर वाले जरूर बनना चाहिए। चाहें कितना भी अपोज़िशन करें।☺

Time: 14.40-17.15

Student: Baba, the Advance Party has received a boon that if one person enters the path of knowledge, all other members of the family will come in knowledge. So, will they come before the 'too-late board' is displayed?

Baba: (Baba is laughing.) They will enter [the path of] knowledge. There is a specialty of the first dynasty of the world as well. What is the specialty? All the people of the subject category will be knowledgeable souls. All of them will follow the path of knowledge. The souls of the subject category do not achieve royal position. So...

Another student: So, Baba, they will be [among] the 9 lakh (900 thousand) [souls], won't they?

Baba: Will the 9 lakh [souls] be alive?

Another student: They will be [among] the 9 lakh, won't they?

Baba: Will the 9 lakh [souls] be alive? How many will remain alive? (Student: Four and a half lakh [450 thousand].) There are only four and a half lakh [souls] that remain alive. So, all the four and a half lakh [souls] will be knowledgeable souls. Well, they may follow the knowledge today or later on. When the 'too-late board' is displayed, then they will follow the knowledge, they will be counted among the knowledgeable souls, their interest in knowledge will increase, but they will not achieve a high position.

Student: Will they come before that?

Baba: The mother says that the members of my family should achieve a high position as well. [It doesn't matter] whether I become Lakshmi-Narayan or not, but the members of my family should definitely become that, it doesn't matter how much they oppose.☺

तीसरा जिज्ञासु: बाबा, पर अभी सुनते नहीं हैं ना। अभी बहुत बोलते हैं तो सुनते नहीं हैं।

बाबा: हाँ, हाँ, तो बता दिया ना सद्गुरु निन्दक ठौर न पावे। उन्हें उतनी ऊँची स्थान नहीं मिलेगा जितना... (दूसरा जिज्ञासु: हमे मिलेगा।) हाँ, औरों को मिलेगा, पुरुषार्थ करने वालों को।

चौथा जिज्ञासु: फिर वो भी तो अक्वल नंबर प्रजा है ना।

बाबा: अक्वल नंबर प्रजा होगी। कहाँ दूसरी डिनायस्टी की प्रजा, कहाँ सतयुग की आठवीं डिनायस्टी की प्रजा। प्रजा प्रजा में अंतर तो होगा। वो प्रजा भी तो... जो नीची डिनायस्टी की प्रजा होगी वो भी तो कनवर्ट होने वाली होगी। और फर्स्ट डिनायस्टी की प्रजा?

दूसरा जिज्ञासु: वो भी कनवर्ट होगी।)

बाबा: नहीं। वो तो कनवर्ट होने वाले होते ही नहीं।

दूसरा जिज्ञासु: कनवर्ट होने वाले नहीं। कलियुग के अंत में तो कनवर्ट होंगे ही ना।

बाबा: आखिरी जन्म में तो सब कनवर्ट (होते हैं)। माया किसी को छोड़ती नहीं है।

A third student: Baba, but they do not listen [to the knowledge] now. Now, I tell them many times, but they do not listen at all.

Baba: Yes, yes, so, it was said that the one who defames the *Sadguru* does not find any accommodation. They will not find as high accommodation as... (Another student: ...we find.) Yes, as the others, who make *purusharth*, get.

A fourth student: However, they are included among the first class subjects, aren't they?

Baba: They will be the No.1 subjects. What a comparison between the subjects of the second dynasty and the subjects of the eighth dynasty of the Golden Age! There will be a difference among the subjects. The subjects of lower dynasties will also convert. And what about the subjects of the *first dynasty*?

Student: They will also convert.

Baba: No. They do not convert at all.

Student: [They are] not those who convert; they will certainly convert in the end of the Iron Age, will they not?

Baba: In the last birth everyone will convert. Maya does not leave anyone.

समय: 17.18-19.32

जिज्ञासु: बाबा, बाहर की दुनिया में जब मकान बनाते हैं तो इंजीनियर प्लैनिंग करते हैं।

बाबा: प्लैनिंग करते हैं।

जिज्ञासु: हाँ। और जो वर्कर होते हैं वो प्रैक्टिकली करते हैं, प्रैक्टिकली मकान खड़ा करते हैं। तो वर्कर के हिसाब से इंजीनियर को ज्यादा पैसा मिलता है और वर्कर को कम मिलता है। लेकिन यहाँ ज्ञान में तो उल्टा है।

बाबा: कहाँ उल्टा है?

जिज्ञासु: विजयमाला को ज्यादा सुख...

बाबा: विजयमाला में जो रानी बनते हैं, जन्म-जन्मान्तर आधीन रहेंगी राजा की, वो ज्यादा सुखी हो गए? आधीन को ज्यादा सुख होता है या स्वाधीन को ज्यादा सुख होता है? (सभी: स्वाधीन।) स्वाधीन ज्यादा सुखी रहता है।

Time: 17.18-19.32

Student: Baba, in the outside world, when people build houses, the engineers do the planning.

Baba: They do the planning.

Student: Yes. And the workers work in practice. They build the house in practice. So, when compared to the workers, the engineers earn more money. And the workers earn less. But here in knowledge it is the opposite thing.

Baba: How is it the opposite thing?

Student: The *Vijaymala* (the rosary of victory) gets more happiness...

Baba: Are those who become queens in the *Vijaymala*, those who remain under the kings for many births happier? Is the one who is under someone happier or is the one who is independent happier? (Everyone said: The one who is independent.) The one who is independent is happier.

जिज्ञासु: फिर भी रुद्रमाला के मणकों को...

बाबा: रुद्रमाला के मणके शिव की माला है। वो तो विजयमाला है। तो कौनसी माला ऊँची? (किसीने कहा: रुद्रमाला।) रुद्रमाला के मणके बनना खुशनसीबी है। ये भगवान की माला है। रुद्र से ऊँचा कोई और है क्या? (सभी ने कहा: नहीं।) ज्ञान ही किसका है? (सभी ने कहा: रुद्र का है।) रुद्र ज्ञान यज्ञ। विष्णु ज्ञान यज्ञ थोड़े ही कहा जाता है। अरे वैष्णवी देवी भी ज्ञान लेगी तो किससे लेगी? ज्ञान धन उसको कहाँ से मिलेगा? (किसीने कहा: नारायण से

1) नारायण से मिलेगा। (किसीने कहा: डायरेक्ट मिलेगा सामने।) डायरेक्ट न सही, डायरेक्ट क्यों मिले? जब नियम बना हुआ है दुर्योधन-दुःशासन से ज्ञान लिया हुआ अच्छा ज्ञान नहीं है। क्या? तो किससे लेना चाहिए? कन्याओं-माताओं से ज्ञान मिले वो ज्यादा अच्छा या पुरुष चोले से ज्ञान मिले वो अच्छा? (सभी: कन्याओं-माताओं से।) कन्याओं-माताओं से ज्ञान मिले। उनके मुख से सुनना-सुनाना अच्छा लगता है।

Student: Yet, the beads of the *Rudramala* (the rosary of Rudra)...

Baba: The beads of the *Rudramala* are [part] of Shiva's rosary. That is *Vijaymala*. So, which rosary (*mala*) is higher? (Student: *Rudramala*.) It is a fortune to become the beads of the *Rudramala*. This is the rosary of God. Is there anyone higher than Rudra? (Everyone said: No.) The knowledge itself belongs to whom? (Everyone said: It belongs to Rudra.) *Rudra Gyan Yagya*⁶. It is not called *Vishnu Gyan Yagya*⁷? *Arey*, when Vaishnavi Devi also obtains knowledge, from whom will she obtain it? From where will she get the wealth of knowledge? (Student: From Narayan.) She will get it from Narayan. (Someone said: She will get it directly, face to face.) It is alright if it is not directly; why should she get it directly? When there is a rule that the knowledge obtained from Duryodhan-Dushasan⁸ is not good knowledge. What? So, from whom should it be obtained? Is it better if you receive the knowledge from virgins and mothers or is it better if you receive knowledge from a male body? (Everyone said: From the virgins and mothers.) The knowledge should be obtained from the virgins and mothers. Listening to and narration [of knowledge] from their mouth feels good.

दूसरा जिज्ञासु: बाबा, नारायण तो पैसा देता है ना?

बाबा: देने वाला तो है। जो मनन-चिंतन-मंथन करेगा वो ही देने वाला होगा। अपनी घोट तो नशा चढ़े।

दूसरा जिज्ञासु: तो बीच में काहे को माता गुरु को?

बाबा: कन्याएं-माताएं पवित्र रहती हैं ना। पवित्रता... पवित्र झोली में ज्ञान टिकेगा या अपवित्र बुद्धि में ज्ञान टिकेगा? (सभी ने कहा: - पवित्र।)

दूसरा जिज्ञासु: उसमें तो एवर प्योर है ना।

बाबा: हाँ, जी। प्यूरिटी की बात है।

Another student: Baba, it is Narayan who gives money, doesn't he?

Baba: He is certainly the giver. The one who thinks and churns will be the giver. If you churn it yourself, you will feel intoxicated.

Another student: So, why is the mother guru put in between?

Baba: Virgins and mothers remain pure, don't they? Purity; will the knowledge remain stable in a pure *jholi* (bag)⁹ or will the knowledge remain stored in an impure intellect? (Everyone said: Pure.)

⁶ *Yagya* of the knowledge of Rudra

⁷ *Yagya* of the knowledge of Vishnu

⁸ Villainous characters in the epic Mahabharata

⁹ Here it means the intellect

Another student: The ever pure One is present in him, isn't He?

Baba: Yes. It is about *purity*.

समय: 19.33-21.05

जिज्ञासु: बाबा, चार ब्रह्मा में पहला ब्रह्मा वैष्णवी।

बाबा: हाँ। बिल्कुल सही बात। अक्वल नंबर ब्रह्मा होगा तो अक्वल नंबर विष्णु भी तो बनेगा।

जिज्ञासु: दूसरा गीता माता।

बाबा: ठीक है ब्रह्मा।

Time: 19.33-21.05

Student: Baba, among the four Brahmas, the first Brahma is Vaishnavi.

Baba: Yes. It is absolutely correct. If she is the No.1 Brahma, she will become the No.1 Vishnu as well.

Student: The second [Brahma] is Mother Gita.

Baba: It is correct that she is Brahma.

जिज्ञासु: और तीसरा ब्रह्मा माना कृष्ण वाली आत्मा।

बाबा: क्यों? कृष्ण वाली आत्मा? प्रजापिता ब्रह्मा नहीं है? पूरा ही दुर्योधन-दुःशासन बना दिया।
☺

दूसरा जिज्ञासु: उसमें तो एवर प्योर है बाबा, वो दुर्योधन-दुःशासन कैसे? उसमें एवर प्योर प्रवेश है।

बाबा: वो तो प्रवेश होने की वजह से है ना। ब्रह्मा में प्रवेश है। ब्रह्मा थोड़े ही एवर प्योर होता है। ब्रह्मा एवर प्योर है या शिव एवरप्योर है? (सभी ने कहा: शिव।) शिव एवर प्योर है। हाँ, पुरुषार्थ करने से लास्ट में एवर प्योर बन जाता है।

जिज्ञासु: जिन बच्चों ने जिस ब्रह्मा से ज्ञान लिया...

बाबा: ज्ञान देने वाला तो एक ही है प्रजापिता। प्रजापिता के अन्दर ही ज्ञान मिलता है। बाकी ब्रह्मा तो सब सुनने-सुनाने वाले हैं ना। सुनने-सुनाने वालों को ज्ञान देने वाला थोड़े ही कहेंगे। (किसीने कुछ कहा।) हाँ, जी।

Student: And the third Brahma is the soul of Krishna.

Baba: Why? The soul of Krishna? Is it not Prajapita Brahma? You have made him a complete Duryodhan-Dushasan. ☺

Another student: There is the ever pure One in him. How can he be a Duryodhan - Dushasan? The ever pure One has entered him.

Baba: That is because of His entrance, isn't it? He has **entered** Brahma. Brahma is not ever pure. Is Brahma ever pure or is Shiva ever pure? (Everyone said: Shiva.) Shiva is ever pure. Yes, by making *purusharth* he becomes ever pure at last.

Student: The children who obtained knowledge from Brahma...

Baba: The giver of knowledge is only one, Prajapita. We receive knowledge only through Prajapita. The remaining Brahma are listeners and narrators, aren't they? Those who listen

and narrate will not be called givers of knowledge. (Someone said something.) Yes. ... (to be continued.)

Extracts-Part-8

समय: 21.06-21.57

जिज्ञासु: बाबा, सच्चे योगी को दिन में कितने बार खाना खाना चाहिए? ☺ जो योगी रहता है उसको देहभान नहीं रहता उसको खाया क्या, नहीं खाया क्या?

बाबा: सोना कितनी बार चाहिए?

जिज्ञासु: सोना तो एक ही बार चाहिए।

बाबा: एक ही बार सोना चाहिए। एक ही बार खाना चाहिए। एक ही बार सफाई करने जाना चाहिए। एक बार योगी, दो बार भोगी, और तीन बार? रोगी।

जिज्ञासु: एक बार बोले तो दोपहर को या रात को?

बाबा: हाँ, हाँ, जब भूख लगे तब खूब कसके तब खा लो। ☺

Time: 21.06-21.57

Student: Baba, how many times should a true *yogi* eat in a day? ☺ A *yogi* is not body conscious. It does not matter whether he eats or not.

Baba: How many times should he sleep?

Student: He should sleep only once.

Baba: He should sleep only once. He should eat only once. He should empty the bowels only once. If he does it once he is a *yogi*; if he does it twice he is a *bhogi* (pleasure seeker), and if he does it thrice? He is a *rogi* (diseased).

Student: 'Once' refers to afternoon or night?

Baba: Yes, yes, eat when you feel very hungry. ☺

समय: 22.00-23.00

जिज्ञासु: बाबा, परमधामी स्टेज और नारायणी नशा में क्या अंतर है?

बाबा: परमधामी स्टेज तो निराकारी स्टेज है। नारायण तो आनन्द का सागर है या शान्ति का सागर है? (किसीने कहा: आनन्द का सागर है।) वो तो आनन्द में रहता है। मौज में रहो और दूसरों को मौज कराओ। आनन्द में रहना तो ऊँची स्टेज हो गई ना। शान्तिधाम है तो ऊँचा धाम। लेकिन शान्ति से भी ज्यादा ऊँची स्टेज कौनसी है? मुक्ति की स्टेज ऊँची है या जीवनमुक्ति की स्टेज ऊँची है? (सभी ने कहा: जीवनमुक्ति।) जीवनमुक्ति की स्टेज ऊँची है। जीवन में रहते हुए भी शान्त भी रहे और सुखी भी रहे। ये ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है असली।

Time: 22.00-23.00

Student: Baba, what is the difference between the stage of the Supreme Abode and *Narayani nashaa*?

Baba: The stage of the Supreme Abode is the incorporeal stage. Is Narayan the ocean of joy or the ocean of peace? (Someone said: An ocean of joy.) He remains joyful. Remain joyful and enable others to enjoy. Living in joy is a higher stage, isn't it? The Abode of Peace is certainly a high abode. But which *stage* is higher than even peace? Is the *stage* of *mukti* (liberation) higher or is the stage of *jiivanmukti* (liberation in life) higher? (Everyone said: *Jiivanmukti*.) The *stage* of *jiivanmukti* is higher. One should remain peaceful as well as joyful while being alive. This is the true aim of the human life.

समय: 23.03-24.05

जिज्ञासु: बाबा, ब्रह्माकुमारी वाले बोलते हैं तुम मुरली में आ जाओ। परिवार बहुत कम हो गया है।

बाबा: मुरली में आ जाओ?

जिज्ञासु: हाँ।

बाबा: उनसे पूछो मुरली किसे कहा जाता है? उनसे पूछो तो कि मुरली किसको कहा जाता है? सो तो बताओ। तुम्हारे ब्रह्मा बाबा ने मुरली किसको बताया है? जो डायरेक्ट मुख से सुनी जाए सो मुरली। टेपरिकार्ड से सुनी जाए तो सेकण्ड क्लास हो जाती है और जो सुन करके या पढ़ करके, कागज़ में पढ़ी जाए, दूसरा कोई पढ़ के सुनाए वो थर्ड क्लास मुरली हो जाती है। बीच में ही काट दो बात को। ☺

जिज्ञासु: हमने बोला - हम नहीं आएंगे। वो बोला परिवार बहुत कम हो गया है। ☺

Time: 23.03-24.05

Student: Baba, the Brahmakumaris say, come to murli [class]. The family has become very small.

Baba: Come to murli [class]?

Student: Yes.

Baba: Ask them, what is meant by murli? Ask them, what is meant by murli? Tell us. What did your Brahma Baba describe as murli? That which is heard directly through the mouth is murli. That which you hear through tape recorder is *second class* and that which is listened to or read out, read out from a paper, if someone else reads it out, it is a *third class* murli. You should cut their point in between. ☺

Student: I told him, I will not come. He said, the family has become very small. ☺

समय: 24.08-25.50

जिज्ञासु: बाबा, ब्रह्मा को चतुरानन, पंचानन कहते हैं, तो पांच नंबर का ब्रह्मा कौनसा है?

बाबा: जिसका सर काट दिया गया। सर काट दिया जाता है तो आत्मा अलग हो जाती है ना। (जिज्ञासु: हाँ) हाँ, तो ब्रह्मा जो है ... जितने-जितनों के नाम ब्रह्मा, ब्रह्मा ही बने रहे, सर नहीं कटा। तो देह अभिमानी, दाढ़ी मूँछ वाले रहे या आत्माभिमानी हो गए? (सभी ने कहा: देहअभिमानी रहे।) देहभानी हैं तो ब्रह्मा हैं। सर कट गया तो ब्रह्मा नहीं रहे।

दूसरा जिज्ञासु: विष्णु है।

बाबा: वो चारों ब्रह्मा को चलाने वाला हो गया। विष्णु भी नहीं। विष्णु भी ब्रह्मा है। ब्रह्मा सो विष्णु वो भी क्या है? वो भी तो ब्रह्मा है। सर किसका कट गया? प्रजापिता का सर कट गया।

दूसरा जिज्ञासु: फिर बकरे का सिर?

बाबा: वो तो दिखाया है प्रभुता पाई काय मद नाहि। हर चीज़ दुनिया की पहले सतोप्रधान, फिर बाद में? (सभी ने कहा: तमोप्रधान।) तमोप्रधान बनती है। मनुष्य सृष्टि का पिता भी पहले सतोप्रधान पार्ट बजाता है अंत में तमोप्रधान पार्ट बजाता है। राम ही रावण बनता है।

तीसरा जिज्ञासु: रावण ही राम बनता है।

बाबा: हाँ। अति का अंत होता है।

Time: 24.08-25.50

Student: Baba, Brahma is called *Caturaanan* (four-headed), *Pancaanan* (five-headed); so, who is the fifth Brahma?

Baba: The one whose head was cut. When the head is cut, then the soul separates, doesn't it? (Student: Yes.) Yes, so all those who are Brahma; all those whose names are Brahma remained just Brahma, their head was not cut. So, did they remain body conscious with beard and moustache or did they become soul conscious? (Everyone said: They remained body conscious.) If they are body conscious, they are Brahma. If their head is cut, they are not Brahma.

A second student: He is Vishnu.

Baba: He is the one who controls all the four Brahmas. Not even Vishnu. Vishnu is also Brahma. What is Brahma who becomes Vishnu? He is a Brahma, too. Whose head was cut? Prajapita's head was cut.

The second student: Then, what about the goat's head?

Baba: It has been shown that *prabhutaa paai kaay mad naahi* (who doesn't become egotistic after getting power?) Everything in the world is *satopradhan* at first; and then? (Everyone said: *Tamopradhan*.) It becomes *tamopradhan*. The father of the human world also plays a *satopradhan* part at first and in the end he plays a *tamopradhan* part. Ram himself becomes Ravan.

A third student: Ravan himself becomes Ram.

Baba: Yes. Extremity comes to an end.

समय: 25.51-26.55

जिज्ञासु: सुना है काशी में शरीर छोड़ा तो स्वर्ग में जाएगा।

बाबा: काशी में शरीर छोड़ेगा तो स्वर्ग में जाएगा। हाँ। उसका अर्थ ये है कि काशी का अर्थ ये होता है कि जहाँ काश्य तेज से भरी-पूरी नगरी हो। क्या? काशी के सारे कार्य बाबा की याद से चलते हैं। याद में अगर रहेंगे तो जैसे बाबा ही सारे कार्य कराता रहेगा। हमको अलग से कोई पुरुषार्थ करने की दरकार नहीं रहेगी। तो ऐसा प्रभाव है काशी का। वहाँ जा करके जो जीते जी देहभान को छोड़ेंगे... क्या? देह और देह के संबंधियों, देह के पदार्थों से बुद्धियोग तोड़ेंगे तो वो फायदे में रहेंगे।

Time: 25.51-26.55

Student: I have heard that if someone leaves his body in Kashi he will go to heaven.

Baba: If someone leaves his body in Kashi, he will go to heaven. Yes. It means that Kashi means a city that is full of luster (*kaashya*), brilliance (*tej*). What? All the work of Kashi takes place in Baba's remembrance. If you remain in remembrance, it is as if Baba himself will go on enabling [us to do] all the tasks. There will not be any need for us to make any *purusharth* separately. So, there is such an effect of Kashi. Those who go there and leave their body consciousness while being alive; what? If they break the connection of their intellect with the body and bodily relatives, things related to the body, they will be benefited.

समय: 27.01-28.20

जिज्ञासु: मिस इंडिया, भारत माता विदेश में क्यों है ? स्वदेश में रहना चाहिए।

बाबा: अच्छे-अच्छे हैंड्स विदेश में भेजे जाते हैं या स्वदेश में रहते हैं? आजकल का जो पढ़ा-लिखा तबक्का है जो ज्यादा बुद्धिमान भारत का तबक्का है वो विदेश में जा रहा है या स्वदेश में उसको पैसा ज्यादा मिल रहा है? (सभी ने कहा: विदेश में।) उसको ज्यादा प्राप्ति कहाँ हो रही है? विदेशियों को कदर है। और स्वदेशियों के यहाँ बुद्धिमान तबक्के की कदर ही नहीं है। इसलिए वैष्णवी भी कहाँ सेवा कर रही है? विदेश में। क्यों? सबसे बड़ी सेवा क्या है? (किसीने कहा: पवित्रता।) नहीं। सबसे बड़ी सेवा है बाप को प्रत्यक्ष करना। वो तो ठीक है प्योरिटी की पावर ही प्रत्यक्ष करेगी। लेकिन सबसे बड़ी सेवा है क्या? (सभी ने कहा: बाप की प्रत्यक्षता।) बाप को प्रत्यक्ष करना। और बाप को प्रत्यक्ष स्वदेशी करेंगे या विदेशी करेंगे? (सभी ने कहा: विदेशी।) तो विदेश में अगर वैष्णवी है तो बुरा है क्या? अच्छी बात है ना।

जिज्ञासु: इसलिए ड्रामानुसार उसको ...

बाबा: हाँ।

Time: 27.01-28.20

Student: Why is Miss India, Mother India abroad? She should be in her own country.

Baba: Are good hands sent to the foreign countries or do they remain in the country? Is today's educated section, is the more intelligent section of Bharat going abroad or is it getting more money in the country? (Everyone said: In the foreign countries.) Where is it obtaining more attainments? The foreigners give them more value. And there is no value of the intelligent section in the country at all. This is why where is Vaishnavi also serving? Abroad. Why? What is the highest service? (Someone said: Purity.) No. The highest service is to reveal the Father. It is correct that the power of purity itself will reveal [the Father]. But which is the highest service? (Everyone said: The revelation of the Father.) To reveal the Father. And will the *swadeshis*¹⁰ reveal the Father or will the foreigners reveal Him? (Everyone said: The foreigners.) So, if Vaishnavi is abroad, what is bad in it? It is good, isn't it?

Student: This is why as per the drama she...

Baba: Yes. ... (to be continued.)

¹⁰ Those who belong to the country Bharat

Extracts-Part-9

समय: 28.21-31.00

जिज्ञासु: बाबा, आत्मा ज्यादा से ज्यादा दो जन्म स्त्री के और दो जन्म पुरुष के लेती है। लेकिन वार्तालाप 200 में बोला है कि सतयुग और त्रेता , स्वर्ग में एक जन्म स्त्री और एक जन्म पुरुष। मतलब वहाँ बैलेन्स रहता है।

बाबा: हाँ।

जिज्ञासु: जबसे द्वापरयुग शुरू होता है, दो जन्म स्त्री के और दो जन्म पुरुष के।

बाबा: बैलेन्स टूट जाता है।

जिज्ञासु: तो सतयुग त्रेता में एक जन्म पुरुष और एक जन्म स्त्री ऐसे होता है।

बाबा: इसलिए रहता है कि वहाँ बैलेन्स होता है। आत्मा और शरीर का बैलेन्स होता है। और द्वापर में? द्वापर में देहभान बढ़ जाता है। बैलेन्स टूट जाता है। इसलिए कभी कोई स्त्री के जन्म ज्यादा लेता है कभी कोई पुरुष के जन्म ज्यादा लेता है। शूटिंग यहाँ होती है।

Time: 28.21-31.00

Student: Baba, a soul receives at the most two (consecutive) births as a female and two births as a male. But it has been said in the Discussion CD No.200 that in the Golden Age and Silver Age, i.e. in heaven a soul receives one birth as a female and one birth as a male. It means there is a balance there.

Baba: Yes.

Student: Ever since the Copper Age begins, they receive two births as a female and two births as a male.

Baba: The *balance* breaks.

Student: So, there is one birth as a male and one birth as a female in the Golden Age and Silver Age.

Baba: It happens like this because there is *balance* there. There is a *balance* of the soul and the body. And what about the Copper Age? Body consciousness increases in the Copper Age. The *balance* breaks. This is why sometimes someone receives more female births and someone receives more male births. The *shooting* takes place here.

दूसरा जिज्ञासु: लेकिन बाबा जो हीरो पार्टधारी है वो द्वापर और कलियुग में ज्यादा जन्म लेता है ना पुरुष के।

बाबा: कौन?

दूसरा जिज्ञासु: हीरो पार्टधारी।

तीसरा जिज्ञासु: प्रजापिता।

बाबा: प्रजापिता? जिसने यहाँ जितना जास्ती याद किया होगा वो याद की पावर से उतना जास्ती सुख भोगेगा। स्त्री जाति ज्यादा सुख भोगती है या पुरुष जाति ज्यादा सुख भोगती है?

जिज्ञासु: पुरुष जाति।

बाबा: पुरुष ज्यादा सुख भोगते हैं। रुद्रमाला के मणके ज्यादा सुख भोगते हैं या विजयमाला के मणके ज्यादा सुख भोगते हैं? (सभी ने कहा - रुद्रमाला के मणके।) रुद्रमाला के मणके पुरुष है ना, इसलिए ज्यादा सुख भोगते हैं। ज्यादा पुरुष जन्म रुद्रमाला के होंगे, रुद्रमाला के मणकों के होंगे या विजयमाला के मणकों के ज्यादा पुरुष जन्म होंगे? (सभी ने कहा - रुद्रमाला के।) जो चन्द्रवंशी हैं, चन्द्रवंशी मणके हैं राधा जैसे, वो स्त्री जन्म ज्यादा लेंगे। जितना अक्वल नंबर का मणका होगा चन्द्रवंशियों का, पहले-पहले नंबर का, उतना जास्ती स्त्री चोला लेगा। लेकिन होते निश्चित हैं। राजाओं को तो दुनियाभर की चिंता, दुनियाभर की परेशानी।

जिज्ञासु: रुद्रमाला के मणके ज्यादा सुख कैसे भोगते हैं?

बाबा: ज्यादा सुख... विकारी सुख ज्यादा भोगते हैं, उधर निर्विकारी सुख भी ज्यादा भोगते हैं।

A second student: But Baba, the hero actor receives more male births in the Copper Age and the Iron Age, doesn't he?

Baba: Who?

Second student: The hero actor.

A third student: Prajapita.

Baba: Prajapita? The more someone has remembered here, the more he will experience happiness through that power of remembrance. Do the women folk experience more happiness or do the men folk experience more happiness?

Student: The men folk.

Baba: The men experience more happiness. Do the beads of the *Rudramala* experience more happiness or do the beads of the *Vijaymala* experience more happiness? (Everyone said: The beads of the *Rudramala*.) The beads of the *Rudramala* are male, aren't they? Hence, they experience more happiness. Will the *Rudramala*, the beads of the *Rudramala* have more male births or will the beads of the *Vijaymala* have more male births? (Everyone said: *Rudramala*.) Those who are *Candravanshis*¹¹, those who are the *Candravanshi* beads like Radha will receive more births as a female. The higher the *number* (rank) of a bead among the *Candravanshis*, the more the number of female births it will receive. But they remain carefree. The kings have all kinds of worries, all kinds of problems.

Student: How do the beads of the *Rudramala* experience more happiness?

Baba: They experience more happiness... more vicious happiness and they experience more vice less happiness there (in heaven) as well.

समय: 32.14-33.20

जिज्ञासु ने कुछ पूछा।

दूसरा जिज्ञासु: बाबा ने कहा न कि अंत समय बाबा बहुत तीखी दृष्टि देंगे, बच्चे ठहर नहीं सकेंगे। ऐसा मुरली का वाक्य है ना। उसके बारे में वो पूछ रहे हैं कि मीठी और तीखी दृष्टि में क्या अंतर है?

¹¹ Those who belong to the Moon dynasty

बाबा: एक मीठी दृष्टि होती है खुशनुमा, प्यार भरी दृष्टि। जैसे माँ बच्चे को देखती है, तो प्यार से देखती है ना। और एक होती है प्यार तो नहीं है लेकिन शक्ति बहुत भरी हुई है। क्या?

दूसरा जिज्ञासु: यानी कि धर्मराज का पार्ट।

बाबा: हाँ, जी। वायब्रेशन जैसे कोई अगर गन्दे संकल्प चलाना भी चाहे तो नहीं चलेंगे।

Time: 32.14-33.20

A student asked something.

Another student: Baba has said that He will give very powerful *drishti* in the end and the children will not be able to bear it. He is asking about it, what the difference between sweet *drishti* and powerful *drishti* is.

Baba: A sweet *drishti* is joyful, affectionate *drishti*. For example, when a mother looks at her child, she looks at him affectionately, doesn't she? And the other [kind of *drishti*] is that there is not exactly love, but there is a lot of power in it. What?

The other student: It means the part of Dharmaraj.

Baba: Yes. For example, even if someone wishes to create dirty vibrations, thoughts, he will not be able to create them.

समय: 33.22-34.40

जिज्ञासु: बाबा, द्वापरयुग में वाल्मीकी ऋषि हुए थे।

बाबा: द्वापरयुग में वाल्मीकी ऋषि ने रामायण लिखी।

जिज्ञासु: हाँ, तो रामायण लिखने से पहले, वो चोर थे।

बाबा: ठीक है।

जिज्ञासु: तो उन्होंने मरा, मरा का जप किया। राम का अपोजिट होता है मरा। तो उनको दिखाते हैं कि सिद्धि प्राप्त हुई और उन्होंने रामायण लिखी। फिर मरा, मरा का जप करके कैसे बाबा? कैसे सिद्धि मिली?

बाबा: ये तो भक्तिमार्ग वालों ने कथा कहानियाँ बनाईं। बाबा ने ये बात थोड़े ही बताईं। दो ही शब्द हैं, अक्षर हैं - रा और म। कोई भी पहले बोलो। फिर वो बोलने से राम भी हो जाएगा और मरा भी हो जाएगा। जीतेजी मरा तो राम बन जाएगा कि नहीं? ☺

Time: 33.22-34.40

Student: Baba, Sage Valmiki existed in the Copper Age.

Baba: Sage Valmiki wrote the Ramayana in the Copper Age.

Student: Yes, so, prior to writing the Ramayana, he was a thief.

Baba: Yes.

Student: So, he chanted [the word] '*maraa, maraa*'. '*Maraa*' is the opposite of Ram (in Hindi). So, it is shown that he achieved *siddhi* (attainment). And he wrote the Ramayana. But Baba, how did he achieve that by chanting [the words] *maraa, maraa*? How did he achieve the *siddhi*?

Baba: The people of the path of *bhakti* have made these stories. Baba did not say this. There are only two words, alphabets - *Ra* and *ma*. You can utter any alphabet first. When it is said [continuously], it may be uttered as Ram as well as *maraa* (died). If someone dies while being alive, will he become Ram or not?

समय: 35.36-36.30

जिज्ञासु: बाबा, जब हम पोतामेल लिखते हैं तब तीन बार बाबा माफ करते हैं। तीन बार माफ करते हैं और चौथी बार माफ नहीं करते।

बाबा: नहीं, माफ तो होता है। बताया तो कम से कम, छुपाया तो नहीं। लेकिन परसेन्टेज कम हो जाती है। पहली बार जो दिया पोतामेल, तो आधा माफ हो जाता है। क्या? दूसरी बार फिर दिया तो परसेन्टेज घटनी चाहिए कि नहीं घटनी चाहिए या आधा ही माफ होता रहे? तो जितनी बार देते जाएंगे उतना परसेन्टेज घटती जाएगी। देते, देते, देते, देते वन परसेन्ट रह जाएगा माफ होना। बाकी सब धर्मराज के खाते में जाएगा।

Time: 35.36-36.30

Student: Baba, when we write *potamail*¹², then Baba pardons us thrice. He pardons us thrice but He does not pardon us the fourth time.

Baba: No, you are pardoned. At least you told it [to Baba]. You did not hide it, did you? But the *percentage* [of the sins that are pardoned] decreases. When someone gives the *potamail* for the first time, then half [of the sins] are pardoned. What? When he gives it again, then should the *percentage* decrease or not? Or will half [of the sins] be pardoned every time? The number of times you go on giving it, the *percentage* [of pardoning] will decrease. If [the same *potamail*] is given again and again, the percentage [of pardoning] will reduce to one percent. The rest will go in the account book of Dharmaraj (the Chief Justice).

समय: 36.31-37.07

जिज्ञासु: बाबा, भक्तिमार्ग में चारों धाम की यात्रा बताया है। यहाँ ज्ञानमार्ग में कम्पिल, फर्रुखाबाद, दिल्ली और चण्डीगढ़ को चारों धाम कहते हैं।

बाबा: ऐसे थोड़े ही। अपनी मनमत में थोड़े ही सारी बातें बना लेनी है?

जिज्ञासु: बाबा, अभी भट्टी किधर होती है? कम्पिल में कि फर्रुखाबाद में?

बाबा: फर्रुखाबाद में ही हो रही है। जब तक कम्पिल का मकान नहीं बनता है तब तक फर्रुखाबाद में ही है।

Time: 36.31-37.07

Student: Baba, the four [main] pilgrimage places have been described in the path of *bhakti*. Here, in the path of knowledge Kampil, Farrukhabad, Delhi and Chandigarh are described as the four *dhaam*.

Baba: It is not so. You should not make up things on the basis of your mind's opinion.

Student: Baba, where is the *bhatti* organized at present? Is it in Kampil or in Farrukhabad?

Baba: It is taking place in Farrukhabad itself. As long as the construction of the building at Kampil is not over, it is [taking place] in Farrukhabad itself.

¹² A letter to Baba containing the account of the secrets and weaknesses of one's body, mind and wealth

समय: 37.06-39.02

जिज्ञासु: बाबा, सीढ़ी के चित्र में राम सोया हुआ है।

बाबा: राम? हाँ। पुरुषार्थ में पड़ा हुआ है। और ब्रह्मा वाली आत्मा फिर भी खड़ी हुई है। हाँ, ठीक है। क्रिश्चियन न ज्यादा पतित होते हैं न ज्यादा पावन बनते हैं। क्रिश्चियन और क्राइस्ट की, क्राइस्ट और कृष्ण की राशि मिलाई जाती है। तो ब्रह्मा बाबा कृष्ण की आत्मा है या नहीं है? (जिज्ञासु - है।) तो वो भी आखरी जन्म में पूरा चौपट में नहीं गिरते हैं। राम वाली आत्मा तो एकदम पटाक। (जिज्ञासु - नीचे गिर जाती है।) हाँ।

दूसरा जिज्ञासु: राम वाली आत्मा ही क्यों गिरी?

बाबा: क्यों गिरी? जो गिरेगा नहीं तो उठेगा कैसे? जितना गहरा गड्ढे में जाएगा, उतना ही ज्यादा हाई जम्प लगाएगा। जितना ऊँचा जाएगा उतना नीचे आएगा कि नहीं आएगा कि बीच में अधर में लटका रहेगा? ये भी तो आलराउण्ड पार्ट बजाने की क्षमता की बात है ना। आत्मा में ज्यादा से ज्यादा दुःख सहन करने की शक्ति होगी तो सुख सहन करने की भी शक्ति होगी। शक्ति दोनों प्रकार का काम करती है। सुख सहन भी करती है। सुख भी भोगती है तो दुःख भी? जास्ती भोग सकती है।

Time: 37.06-39.02

Student: Baba, Ram is sleeping in the picture of the ladder.

Baba: Ram? Yes. He is lying down in making *purusharth*. And the soul of Brahma is still standing. Yes, it is correct. The Christians neither become more sinful nor purer. The horoscopes of the Christians and Christ, of Christ and Krishna are matched. So, is Brahma Baba the soul of Krishna or not? (Student: He is.) So, he too does not degrade completely in the last birth. The soul of Ram falls completely. (Student: It falls down.) Yes.

Another student: Why did only the soul of Ram experience downfall?

Baba: Why did it experience downfall? How will the one who doesn't fall rise up? The deeper someone falls into a pit, the higher he will jump. Will the one who rises high come down to the same extent or not or will he keep hanging in mid-air? This is also about the ability to play an *all round part*, isn't it? If the soul has maximum power to tolerate sorrow, it will also have the power to experience joy. Both kinds of powers work. It experiences happiness and what about sorrow? It can experience more sorrow as well. (Concluded.)